हिंदी–छत्तीसगढ़ी एवं संस्कृत

कक्षा – 3

सत्र 2019–20

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।

विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढ़े एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

DIKSHA

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉच करे → **App** की समस्त अनुमति को स्वीकार करें → उपयोगकर्ता **Profile** का चयन करें।

पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।

मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।

सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

(1) QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

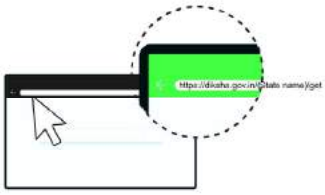

(2) ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

(3) सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

(4) प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

निःशुल्क वितरण हेतु

© राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

4DSFIF

प्रकाशन वर्ष 2019

मार्गदर्शन

डॉ. हृदयकांत दीवान, विद्या भवन, उदयपुर

संयोजक

डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

मुख्य समन्वयक

श्री आर. के. वर्मा

विषय समन्वयक

बी. आर. साहू, विद्या डांगे

लेखक मण्डल

हिंदी	छत्तीसगढ़ी	संस्कृत
डॉ. सी.एल.मिश्र, बी. आर. साहू, डॉ. एस.एस. त्रिपाठी, राजेन्द्र पाण्डेय, गजानन्द प्रसाद देवांगन, श्रीमती उषा पवार, डॉ.(श्रीमती) रचना अजमेरा, अजय गुप्ता, विनय शरण सिंह, दिनेश गौतम।	एम.एस.वर्मा, दिनेश गौतम, भूषण लाल परगनिहा, एम. जाकिर, रामकुमार वर्मा, रमेश यादव, श्रीमती तृप्ता कश्यप, शिवकुमार अंगारे, योगेन्द्र बेलचंदन	डॉ. सुरेश शर्मा, बी.पी. तिवारी,(समन्वयक) डॉ. कल्पना द्विवेदी, ललित कुमार शर्मा, डॉ. संध्यारानी शुक्ला, डॉ. राजकुमार तिवारी

चित्रांकन

राजेन्द्र सिंह ठाकुर, रेखराज चौरागड़े, समीर श्रीवास्तव, प्रशांत, गिरिधारी साहू

आवरण पृष्ठ एवं ले–आउट

रेखराज चौरागड़े

प्रकाशक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर

मुद्रक

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – .....

प्राक्कथन

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छत्तीसगढ़, रायपुर को सत्र 2002–03 में छत्तीसगढ़ शासन की ओर से प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम तैयार करने तथा उस पर आधारित पाठ्यपुस्तकों की रचना करने का दायित्व सौंपा गया। यह निर्णय भी लिया गया था कि नवरचित पाठ्यपुस्तकों का दो वर्षो तक राज्य के विभिन्न अंचलों के चयनित विद्यालयों में क्षेत्र–परीक्षण किया जाएगा और फिर विद्यार्थियों, शिक्षकों, प्रधान अध्यापकों, पालकों और विषय विशेषज्ञों के सुझावों के आधार पर उनमें संशोधन उपरांत राज्य के समस्त विद्यालयों हेतु उपलब्ध कराया जाएगा। तदनुसार सत्र 2007–08 से कक्षा 3 की पाठ्यपुस्तक को राज्य के समस्त विद्यालयों में अध्ययन हेतु उपलब्ध कराया जा रहा है।

इस पुस्तक को अंतिम रूप देते समय विषय के विशेषज्ञों द्वारा क्षेत्र के विद्यालयों में भ्रमण कर विद्यार्थियों, शिक्षकों और भाषा के अन्य विशेषज्ञों से चर्चा की गई और विद्यार्थियों के ज्ञान के स्तर, शिक्षकों तथा समुदाय से प्राप्त सुझावों को दृष्टिगत रखते हुए आवश्यक संशोधन, परिवर्तन किया गया है।

भाषा–शिक्षण का मूल उद्देश्य है–सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, व्यावहारिक व्याकरण का ज्ञान, भाषा प्रयोग तथा सृजनात्मकता का विकास करना। इस पुस्तक में इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति करने का प्रयास किया गया है। इस पुस्तक के द्वारा हमने विद्यार्थियों को साहित्य की विभिन्न विधाओं–निबंध, कहानी कविता, पत्र, आत्मकथा, एकांकी आदि से परिचित कराया है। साहित्य की इन विधाओं का परिचय उनकी अभिरुचि को परिष्कृत करके उनको श्रेष्ठ साहित्य के अध्ययन की ओर प्रेरित करेगा, यह हमारा विश्वास है।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से **Energized Text Books** एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। **ETBs** का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

इस पुस्तक में जिन विचारों और मानवीय मूल्यों पर अधिक बल दिया गया है उनमें पारस्परिक सद्भाव, सामाजिक सहयोग, साहस, पर्यावरण चेतना को विशेष स्थान दिया गया है। पुस्तक को स्तरानुकूल और रोचक बनाने में राज्य तथा राज्य के बाहर के अनेक शिक्षकों, विद्वानों, शिक्षाविदों का महत्वपूर्ण योगदान है। पाठों के चुनाव करने में हमें डॉ. हृदयकान्त दीवान विद्याभवन, उदयपुर एवं प्रो. रमाकान्त अग्निहोत्री दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली का विशेष रूप से मार्गदर्शन मिला है। परिषद् उनके बहुमूल्य सहयोग के लिए आभारी है। लेखक मंडल के सदस्यों ने जिस कर्मठता और लगन से इस पुस्तक को अंतिम रूप प्रदान किया है, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। पुस्तक में जिन कवियों/लेखकों की रचनाएँ संकलित की गई हैं, हम उनके या उनके उत्तराधिकारियों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षाविदों द्वारा भेजे गए सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

शिक्षकों से कुछ बातें

शिक्षक मित्रो! हिंदी कक्षा–3 आपके हाथ में है। यों तो इसका प्रायोगिक संस्करण वर्ष–2005–06 में ही प्रकाशित हो गया था, किंतु वह राज्य के मात्र दो सौ विद्यालयों में ही प्रचलन में था। क्षेत्र परीक्षण के दौरान विद्यार्थियों को आई कठिनाइयों, अपने राज्य के तथा राज्य के बाहर के शिक्षाविदों तथा राज्यस्तरीय पाठ्यपुस्तक समिति के सुझावों के उपरांत प्रायोगिक संस्करण में आवश्यक सुधार करके प्रस्तुत संस्करण का स्वरूप प्रदान किया गया है। फलस्वरूप वर्तमान संस्करण में आपको काफी परिवर्तन दिखाई पड़ेगा।

इस संस्करण में हमने गतिविधियों पर काफी बल दिया है। प्रत्येक पाठ को पढ़कर विद्यार्थी परस्पर मौखिक प्रश्न पूछें और उनके उत्तर दें। इससे विद्यार्थियों में प्रश्न गढ़ने की कला विकसित होगी और पाठों के प्रति उनकी समझ विकसित होगी। विद्यार्थियों के परस्पर प्रश्नोत्तर के बाद आप भी कुछ मौखिक प्रश्न उनसे पूछें। इससे आपको भी यह परीक्षण करने का अवसर मिलेगा कि विद्यार्थी पाठ को आत्मसात कर पाए हैं या नहीं।

अभ्यास में दिए गए प्रश्न कई तरह के हैं। कुछ प्रश्न तो सीधे–सीधे सूचना आधारित प्रश्न हैं, जो सीधे पाठ से खोजे जा सकते हैं; कुछ प्रश्न कार्य–कारण संबंध वाले हैं तथा कुछ अन्य प्रश्न कल्पना व सृजनात्मकता वाले हैं। ऐसे प्रश्नों के उत्तर देने में बच्चों को सोचना पड़ेगा; अतः ऐसे प्रश्नों से वे अधिक सीख सकेंगे। बच्चों को सोचने के लिए प्रोत्साहित करें। इसी प्रकार के प्रश्नों के उत्तर यदि बच्चे अपनी भाषा में दें या लिखें तो अच्छा है।

विद्यार्थियों के उच्चारण पर भी आप ध्यान दें। विद्यार्थी बहुधा श–स; छ–क्ष, र, ऋ के उच्चारण में भेद नहीं कर पाते। इन वर्णों से बने शब्दों का अधिक–से–अधिक उच्चारण कराएँ। निरंतर अभ्यास से उच्चारण दोष अवश्य दूर होते हैं।

यही प्रक्रिया शब्दार्थ के संबंध में भी अपनाई गई है। शब्द का अर्थ विद्यार्थी की समझ में आ गया, यह तभी सही माना जाएगा, जब विद्यार्थी उस शब्द को वाक्य में प्रयोग कर सकेगा। बच्चे इन शब्दों का उपयेाग कर जितने वाक्य बता सकेंगे उतना ही अच्छा है।

उच्चारण दोष के साथ–ही–साथ विद्यार्थियों के वर्तनी संबंधी दोषों को दूर करने के लिए श्रुतिलेखन पर भी प्रस्तुत पुस्तक में बल दिया गया है। श्रुतिलेख की जाँच के लिए बच्चों को परस्पर एक दूसरे की अभ्यासपुस्तिका देखने को दें। ये अभ्यासपुस्तिकाएँ बच्चे आपके मार्गदर्शन में देखेंगे। इससे उन्हें शब्दों के शुद्ध और अशुद्ध रूप को पहचानने में सहायता मिलेगी। श्रुतिलेख के द्वारा बच्चों को सुधार लेख लिखने का भी अभ्यास होगा।

योग्यता–विस्तार के अंतर्गत कुछ ऐसे अभ्यास दिए गए हैं जिनमें बच्चों की सृजनशीलता का विकास होगा। ये अभ्यास अलग– अलग प्रकार के हैं, जैसे कहीं बच्चों से ढूँढ़कर या पूछकर या सोचकर कुछ लिखने को कहा गया है। कहीं चित्र या टिकटें या पत्तियाँ संग्रह करने को कहा गया है; कहीं किसी पक्षी या पशु के बिंदु–चित्र से उसका पूरा चित्र बनाने के लिए कहा गया है; कहीं किसी घटना का कक्षा में या बालसभा में वर्णन करने को कहा गया है। ऐसे क्रियाकलापों से बच्चों का

रचनात्मक और सृजनात्मक विकास होगा। समय–समय पर कक्षा या बालसभा में वादविवाद, अंत्याक्षरी, चित्र–निर्माण आदि का आयोजन करने से या उन्हें ऐतिहासिक स्थलों पर भ्रमण करवाने और उस पर लेख लिखवाने के क्रियाकलापों से भी बच्चों की क्षमताओं का विकास होगा। आपको यह देखना है कि इन क्रियाकलापों में सभी विद्यार्थियों की सहभागिता रहे। शिक्षण के क्षेत्र में पाठ्यपुस्तक, सहायक सामग्री तथा अन्य शैक्षिक गतिविधि कोई भी इतना सुझाव नहीं दे सकती जितना एक सुयोग्य शिक्षक दे सकता है। वह शिक्षक ही है जो, नीरस विषयवस्तु को सुगम और सरस बना देता है। हमें विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तक के शिक्षण में राज्य के सभी संबंधित शिक्षक अपनी इस प्रतिभा का सही उपयोग करेंगे।

प्रत्येक शिक्षक अपने ढंग से शिक्षण–पद्धति को अपनाता है। शिक्षण की उसकी अपनी शैली रहती है। फिर भी हम अपेक्षा करते हैं कि हमारे इन सुझावों पर आप विचार करेंगे और यदि इन सुझावों को उपयोगी समझें तो अवश्य अपनाएँगे।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

विषय–सूची

हिंदी

क्र.	पाठ	पृष्ठ
	हिन्दी	
1.	सीखो	1–4
2.	सच्चा बालक	5–9
3.	मुसवा रइथे जी (छत्तीसगढ़ी)	10–13
4.	बंदर बाँट	14–19
5.	मीठे बोल	20–22
6.	कबूतर और मधुमक्खियाँ	23–27
7.	चाँद का कुरता	28–32
8.	चलव खेलबो (छत्तीसगढ़ी)	33–39
9.	आदिमानव	40–44
10.	चुहिया की शादी	45–49
11.	दादा जी	50–54
12.	हाथी	55–60
13.	होनहार लइका नरेन्द्र (छत्तीसगढ़ी)	61–63
14.	कौन जीता	64–67
15.	मैं हूँ महानदी	68–72
16.	अगर पेड़ भी चलते होते	73–76
17.	सतवन्तिन गाय बहुला (छत्तीसगढ़ी)	77–83
18.	जंगल में स्कूल	84–87
19.	तेल का गिलास	88–92
20.	अब बतलाओ	93–98
21.	मैत्रीबाग (छत्तीसगढ़ी)	99–103
22.	क्या तुम मेरी अम्मा हो?	104–108
23.	कविता का कमाल	109–115
24.	बालसभा	116–118
	पुनरावृत्ति के प्रश्न	119–123
	संस्कृत	124–136
	राजू की कहानी	i–xvi

पाठ 1

सीखो

3JS9MD

प्रकृति की वस्तुओं से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। फूल हमें हँसना सिखाते हैं, भौंरे गुनगुनाना और दीपक हमें जलकर भी प्रकाश देना सिखाता है। हमें चाहिए कि हम प्रकृति की चीजों से सदा कुछ सीखते रहें।

फूलों से नित हँसना सीखो,
भौंरों से नित गाना।
तरु की झुकी डालियों से नित
सीखो शीश झुकाना।।

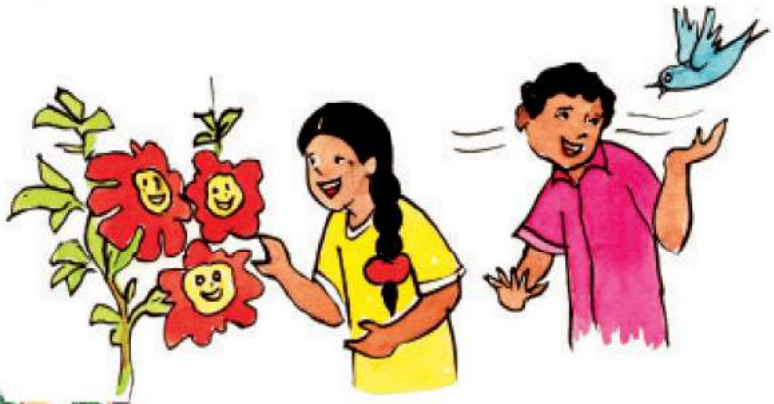

सीख हवा के झोंकों से लो
कोमल भाव बहाना।
दूध तथा पानी से सीखो
मिलना और मिलाना।।

सूरज की किरणों से सीखो
जगना और जगाना।
लता और पेड़ों से सीखो
सबको गले लगाना।।

मछली से सीखो, स्वदेश
के लिए तड़पकर मरना।
पतझड़ के पेड़ों से सीखो,
दुख में धीरज धरना।।

दीपक से सीखो जितना
हो सके अँधेरा हरना।
पृथ्वी से सीखो प्राणी की
सच्ची सेवा करना।।

जलधारा से सीखो, आगे
जीवन–पथ में बढ़ना।
और धुएँ से सीखो हरदम
ऊँचे ही पर चढ़ना।।

शब्दार्थ

तरु	=	पेड़, वृक्ष	धीरज	=	धैर्य
शीश	=	सिर	स्वदेश	=	अपना देश
नित	=	रोज			

नीचे कुछ शब्दों के अर्थ नहीं लिखे हैं। उन शब्दों के अर्थ कोष्ठक में से छाँटकर लिखो।

जलधारा – ——————————

हरदम – ——————————

पथ – ——————————

(हमेशा, रास्ता, बहता पानी)

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. फूलों से हम क्या सीख सकते हैं?

प्र.2. सूरज की किरणें हमें क्या संदेश देती हैं ?

प्र.3. दीपक दिन–रात जलकर हमें क्या सिखाता है ?

प्र.4. जलधारा हमें क्या सिखाती है ?

प्र.5. ये बातें हमें कौन सिखाता है?

क– जगना और जगाना

ख– मिलना और मिलाना

ग– नित्य गाना

घ– जीवन–पथ में आगे बढ़ना

ङ– हरदम ऊँचे पर ही चढ़ना।

प्र.6. दीपक हमें प्रकाश देता है, ये चीजें हमें क्या देती हैं ?

मधुमक्खी .....

पेड़ .....

मिट्टी .....

बादल .....

प्र.7. तुम रोज सुबह कितने बजे उठते हो ?

प्र.8. तुम घर के किन कामों में अपनी माँ या बड़ों की मदद करते हो ?

भाषा–अध्ययन एवं व्याकरण

• शिक्षक श्रुतिलेख के रूप में एक पद बोलेंगे, विद्यार्थी लिखेंगे। बाद में अभ्यास –पुस्तिकाएँ अदल–बदलकर विद्यार्थी जाँचेंगे।

प्र.1. इस कविता में आए उन शब्दों को लिखो, जिनकी तुक मिलती हो, जैसे बढ़ना–चढ़ना।

प्र.2. समान अर्थवाले शब्दों की जोड़ी बनाकर लिखो।

सुमन	पृथ्वी
वृक्ष	सूरज
वायु	फूल
रवि	पवन
धरा	तरु

प्र.3. पढ़ो, समझो और लिखो।

जगना	जगाना
मिलना	.....
झुकना	.....

योग्यता विस्तार

- **सोचो, यदि ऐसा हो तो क्या होगा?**
- हवा न बहे।
- सूरज न उगे।
- पेड़ न हों।
- दीपक जलकर रोशनी न करे।
- अपने आस–पास ध्यान से देखो कि वहाँ क्या–क्या है? फिर उनके नाम इस तालिका में लिखो। और उनमें से जो तुम्हें पसंद हो, उनके चित्र बनाओ ।

फूलों के पौधे	वृक्ष	लताएँ	जलधारा / नदी

शिक्षण–संकेत

- कविता को लय और गति के साथ पढ़ाएँ।
- दो–दो पंक्तियाँ अलग–अलग विद्यार्थियों से पढ़वाएँ और उनके अर्थ पूछें।
- प्रकृति के बारे में बच्चों से चर्चा करें एवं उनके अनुभव सुनें ।

3K25P1

पाठ 2

सच्चा बालक

3KB1QN

यह पाठ गोपालकृष्ण गोखले के बाल – जीवन की एक घटना पर आधारित है, जिसमें उन्होनें अपनी सच्चाई का परिचय दिया । आगे चलकर उन्होने देश को स्वतंत्रता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आओ, हम माननीय गोपाल कृष्ण गोखले के बाल–जीवन की यह घटना पढ़ें और इससे शिक्षा ग्रहण करें।

एक दिन गुरु जी ने अपनी कक्षा के बच्चों को गणित का एक प्रश्न दिया। बच्चे प्रश्न को उस समय हल नहीं कर पाए। गुरु जी ने कहा, '' अच्छा इसे घर से करके लाना।'' इसके बाद छुट्टी हो गई और सब बच्चे अपने–अपने घर चले गए।

अगले दिन जब बच्चे शाला में पहुँचे तो सबने अपना–अपना गणित का हल किया हुआ प्रश्न गुरु जी को दिखाया। गुरु जी ने प्रत्येक बच्चे का प्रश्न जाँचा, परंतु किसी का भी हल ठीक नहीं निकला। कुछ बच्चों ने तो प्रश्न को हल करने का प्रयत्न ही नहीं किया था।

जब सब बच्चे अपनी–अपनी कॉपी दिखा चुके तब गोपाल ने अपनी कॉपी दिखाई। प्रश्न का उत्तर ठीक था। गुरु जी प्रसन्न हो गए और गोपाल की प्रशंसा करने लगे। अपनी प्रशंसा सुनकर सभी खुश होते हैं, परंतु गोपाल के चेहरे पर उदासी छा गई। गुरु जी ज्यों–ज्यों उसकी प्रशंसा करते गए त्यों–त्यों उदासी बढ़ती गई। अपनी अधिक प्रशंसा सुनकर वह बालक फूट–फूटकर रोने लगा।

गोपाल को रोता देखकर गुरु जी और सभी बच्चे आश्चर्यचकित रह गए। तब गुरु जी ने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा, '' बेटा! तुम तो बहुत योग्य बच्चे हो, भला रो क्यों रहे हो?''

गोपाल सिसकियाँ भरते हुए कहने लगा, '' गुरु जी! आप मेरी प्रशंसा कर रहे हैं, किंतु यह प्रश्न मैंने अपने आप हल नहीं किया। यह तो मैंने अपने बड़े भाई से पूछकर हल किया था। मुझे अपनी झूठी प्रशंसा सुनकर दुख हो रहा है।''

गुरु जी ने गोपाल की बात सुनी तो उनका हृदय गद्‌गद् हो गया। उन्होंने उसकी सच्चाई की प्रशंसा करते हुए कहा, "बेटा, एक दिन तुम अवश्य अपना व अपने देश का नाम उज्ज्वल करोगे।"

बड़ा होकर वह बालक गोपाल कृष्ण गोखले के नाम से प्रसिद्ध हुआ। देश को स्वतंत्र कराने में गोखले जी का बहुत बड़ा योगदान रहा।

गोपाल कृष्ण गोखले

शब्दार्थ

योगदान	=	सहयोग
सपूत	=	अच्छा पुत्र
प्रसिद्ध	=	मशहूर
स्वतंत्र	=	आजाद
उज्ज्वल	=	स्वच्छ, साफ, चमकता हुआ

नीचे कुछ शब्दों के अर्थ नहीं लिखे हुए हैं। उन शब्दों के अर्थ कोष्ठक में से छाँटकर लिखो।

प्रयत्न = ——————————

प्रत्येक = ——————————

प्रशंसा = ——————————

(तारीफ, कोशिश, हर एक)

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. गुरु जी द्वारा अपनी प्रशंसा सुनकर गोपाल दुखी क्यों हुआ ?

प्र.2. गोपाल को सच्चा बालक क्यों कहा गया ?

प्र.3. गोखले जी क्यों प्रसिद्ध हुए ?

प्र.4. गोपाल की जगह तुम होते तो क्या करते ?

प्र.5. कोई तुम्हारी झूठी प्रशंसा करे तो तुम उससे क्या कहोगे ?

प्र.6. अपनी प्रशंसा सुनकर सभी बच्चे प्रसन्न होते हैं। इस संबंध में तुम्हारा क्या कहना है ?

प्र.7. इन वाक्यों को पाठ के अनुसार क्रम से लिखो।

क. गोपाल ने अपनी कॉपी दिखाई।

ख. गुरु जी ने प्रत्येक बच्चे की कापी जाँची।

ग. बड़ा होकर यह बालक गोपाल कृष्ण गोखले के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

घ. गुरु जी ने उसकी सच्चाई की प्रशंसा की।

ङ. गुरु जी ने गणित का एक प्रश्न हल करने को दिया।

प्र.8. हर खाने में से एक–एक शब्द/शब्द–समूह लेकर वाक्य बनाओ।

सब	अपनी–अपनी	हल करने का	दिखाई।	
	कुछ बच्चों ने	स्वतंत्र कराने में	अपने–अपने घर	महत्वपूर्ण हाथ था।
	देश को	प्रश्न	कॉपी	प्रयत्न ही नहीं किया।
	सब बच्चों ने	बच्चे	गोखले जी का	चले गए।

प्र.9. सही जोड़ी बनाओ।

अ	आ
गुरु जी	फूट–फूटकर रोने लगा।
देश	का सवाल किसी ने हल नहीं किया।
गोपाल	स्वतंत्र हो गया।
गणित	प्रसन्न हो गए।

भाषा–अध्ययन एवं व्याकरण

प्र.1. पढ़ो, समझो और छाँटकर अलग–अलग तालिका में लिखो।

क्रम, प्रार्थना, कार्य, पूर्व, प्रशंसा, भ्रम, दर्शक, कर्म, नम्र, प्रकाश।

रेफ वाले शब्द	रकार वाले शब्द
जैसे – कर्म	जैसे– प्रकाश

प्र.2. इन शब्दों में से सही शब्द चुनकर लिखो।

प्रशंसा/प्रशंशा, गुरु जी/गुरू जी, प्रश्न/प्रशन, कॉपी/कौपी, अधिक/अधीक

प्र.3. 'पुनः' इस शब्द में अः (:) लगा हुआ है। दो ऐसे शब्द लिखो जिनमें : का प्रयोग होता है।

प्र.4. तुमने बारहखड़ी क,का,कि,की,कु,कू,के,कै,को,कौ,कं पढ़ी है। इन शब्दों को इसी क्रम में लिखो।

मीत, मेरा, मुझे, मौका, मोर, मंद, मैना, मत, मूठ, मिलना, मान।

प्र.5. इनका प्रयोग करते हुए खाली स्थान भरो और शब्द पूरे करो।

न, ना, नि, नी, नु, नू, ने, नै, नो, नौ, नं।

अ –क, – तिक, – म, – शानी, सु–, –का, – द, सु – गे, – कसान, – तन।

समझो

- नीचे लिखे वाक्यों को पढ़ो–

क. गुरु जी ने प्रत्येक बच्चे का उत्तर जाँचा।

ख. गुरु जी गोपाल की प्रशंसा करने लगे।

ग. गोपाल कृष्ण गोखले ने देश की सेवा की।

'क' वाक्य में 'गुरु जी' और 'बच्चे' शब्दों का प्रयोग हुआ है। गुरु जी शिक्षक के लिए कहा गया है। 'ख' वाक्य में 'गोपाल' और 'प्रशंसा' शब्दों का प्रयोग हुआ है। 'गोपाल' व्यक्ति का नाम है और 'प्रशंसा' भाव का। वाक्य 'ग' में 'देश' शब्द का प्रयोग हुआ है। यह स्थान का नाम है। वस्तु, व्यक्ति, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

प्र.6. क. दो व्यक्तियों के नाम लिखो, जैसे– राम, गीता आदि ।

ख. दो वस्तुओं के नाम लिखो, जैसे–कुर्सी मेज आदि ।

ग. दो स्थानों के नाम लिखो, जैसे – रायपुर,राजिम आदि ।

घ. दो भावों के नाम लिखो, जैसे – अच्छाई, भलाई आदि ।

प्र.7 इस पाठ में ज्यों–ज्यों, सों–सों, अपनी–अपनी जैसे शब्दों की आवृति वाले शब्दों का प्रयोग हुआ है। अब निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो–

अपना–अपना, जल्दी–जल्दी, सुबह–सुबह शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

रचना

- अपने आसपास की किसी ऐसी घटना के बारे में लिखो जो तुम्हें अच्छी लगी हो या अच्छी ना लगी हो।

योग्यता विस्तार

- अन्य महापुरुषों के बचपन की घटनाओं की जानकारी लो और कक्षा में सुनाओ।

3KJWSB

शिक्षण–संकेत

- पाठ का आदर्श वाचन करें और विद्यार्थियों से अनुकरण वाचन कराएँ।
- पठन–कौशल के विकास के लिए अतिरिक्त पाठ्य–सामग्री दें।
- कठिन शब्दों के अर्थ समझाएँ और उनका वाक्यों में प्रयोग कराएँ।
- महापुरुषों के बचपन की ऐसी ही घटनाएँ खोजने और कक्षा में सुनाने को कहें।

3KTSTY

पाठ 3

मुसवा रइथे जी

पाठ परिचय– अलग–अलग जीव के रहे के ठिकाना अलग–अलग रहिथे। जइसे चिरइ मन खोंधरा बना के रहिथे अउ गेंगरुवा ह कच्चा माटी म रहिथे। ए गीत म किसम–किसम के जीव के रहे के ठिकाना बताए गे हावय।

कउँवा रइथे खोंधरा म अउ,
बिला म मुसवा रइथे जी ।
कोलिहा रइथे खेत–खार म,
पानी म केछवा रइथे जी ।।

चाँटी रेंगय भुइयाँ म अउ,
मछरी तउँरय पानी म।
मेचका रइथे दुनो जघा म,
कोठा म गरुवा रइथे जी।।

कुकुर ह रइथे खोर–गली म,
मिट्ठू रुख–राइ म जी ।
रेरा चिरइ के खोंधरा सुघ्घर,
माटी म गेंगरुवा रइथे जी ।।

शिक्षण संकेत– कविता ल राग ले पढ़ँय अउ लइका मन ल पढ़वावँय। लइका मन के दल बना के दूदी पंक्ति एकक दल ले सरलग बोलवावयँ। पाठ म आए जीव–जंतु ल छोड़ अउ आने जीव–जंतु के नाँव अउ उँखर रेहे के जघा के गोठ–बात करँय।

केकरा घलो बिला म रइथे,
खुसरा रइथे खोंड़रा म।
भँइसी रइथे भँइसथान म,
कोठा म पँड़वा रइथे जी।।

हाथी रइथे बन–जंगल म,
बेंदरा डारा–खाँधा म ।
हवा म किंजरत रइथे फाँफा,
माँड़ा म बघवा रइथे जी ।।

कठिन शब्द मन के हिन्दी मायने –

रेरा = बया चिड़िया, खोंधरा = घोंसला गेंगरुवा = केंचुवा
पँड़वा = भैंस का बच्चा माड़ा = गुफा खोंड़रा = कोटर
डारा–खाँधा = पेड़ की शाखा

खाल्हे म लिखाय शब्द मन के अर्थ हिन्दी म लिखव–

सुग्घर =
बिला =
मुसवा =
केकरा =
कुरिया =

प्रश्न अउ अभ्यास

गतिविधि–

गुरुजी कक्षा ल दू दल म बाँट देवँय। दुनो दल एक दूसर ले मुँहअखरा प्रश्न पूछँय। पाछू गुरुजी ह घलो मुँहअखरा प्रश्न पूछँय। कुछ प्रश्न अइसन हो सकथे–

(क) कोलिहा कहाँ रइथे ?

(ख) काखर खोंधरा सुग्घर होथे ?

बोध प्रश्न–

प्रश्न 1. ए प्रश्न मन के उत्तर लिखव ?

(क) कउँवा कहाँ रइथे ?

(ख) बिला म कोन–कोन रइथे ?

(ग) कोन जीव ह पानी अउ भुइयाँ दूनों जघा म रइथे ?

(घ) गरुवा मन कहाँ बँधाथे ?

(ड.) पानी म रहइया जीव–जंतु के नाँव लिखव ?

भाषा–अध्ययन अउ व्याकरण–

प्रश्न 1. पढ़व समझव अउ लिखव

1. कउँवा – काँव–काँव।
2. कोलिहा – .....।
3. मेचका – .....।
4. बेंदरा – .....।
5. मिट्ठू – .....।

प्रश्न 2. जोड़ी मिलावव–

1. पिंजरा	–	बघवा
2. कोठा	–	मछरी
3. माड़ा	–	केकरा
4. पानी	–	मिट्ठू
5. बिला	–	गरुवा

प्रश्न 3. खाल्हे म लिखाय वाक्य मन ल हिन्दी म लिखव

(क) रेरा चिरइ के खोंधरा सुग्घर होथे।

(ख) फाँफा हवा म किंजरत रइथे।

(ग) केकरा घलो बिला म रइथे।

(घ) मछरी पानी म तउँरथे।

समझव – कतकोन जीव–जंतु के नाँव ल सँघरा बोले जाथे।

जइसे : कुकुर – बिलइ

प्रश्न 4. ए पाठ म आय शब्द मन बर जोड़ी (सँघरा अवइया शब्द) खोज के लिखव।

1. खेत – .....।
2. गाय – .....।

प्रश्न 5. पढ़व, चिन्हव अउ सबले अलग ल छाँट के लिखव–

(क) बघवा, कउँवा, हाथी, कोलिहा

(ख) खोंधरा, बिला, जलेबी, पिंजरा

(ग) रेरा चिरइ, मिट्ठू, कोइली, केकरा

(घ) बेंदरा, मछरी, केछवा, मेचका

प्रश्न 6. खाली जघा ल सही शब्द छाँट के भरव–

(क) मछरी ह .....। (उड़थे / तउँरथे)

(ख) चाँटी ह .....। (रेंगथे / दउँड़थे)

(ग) मिट्ठू ह .....। (उड़थे / भूँकथे)

(घ) केकरा ह .....। (दउँड़थे / रेंगथे)

योग्यता विस्तार–

1. मछरी, मेंचका, कउँवा अउ मिट्ठू के चित्र बनावव।
2. चिरइ मन अपन खोंधरा ल कइसे बनाथें ? देख के बतावव।
3. मुसुवा अऊ बेंदरा के अलग–अलग कहिनी खोजव अउ कक्षा म सुनावव।
4. चार प्रकार के चिरइ मन के खोंधरा के बारे म लिखव–

(1) खोंधरा बनाए के जघा कोन तिर हे ?

(2) खोंधरा बनाए बर का–का जिनिस के उपयोग होए हे?

(3) खोंधरा ह दूसर चिरई के खोंधरा ले का–का बात म अलग हे ?

3L3NVL

3LCJX9

पाठ 4

बंदरबाँट

आपस की लड़ाई का परिणाम बुरा होता है। यदि उस लड़ाई का फैसला किसी चालाक आदमी को करने को दे दिया जाए तब तो स्थिति और बिगड़ जाती है। एक रोटी के लिए दो बिल्लियों में झगड़ा हुआ। बंदर ने उसका फैसला किया। दोनों बिल्लियों को उस रोटी से हाथ धोना पड़ा, इसलिए हमें आपस में मिल–जुलकर रहना चाहिए। झगड़ा हो तो आपस में ही निपटारा करना चाहिए।

(म्याऊँ–म्याऊँ की आवाज़ होती है। एक ओर से काली बिल्ली और दूसरी ओर से सफेद बिल्ली प्रवेश करती है।)

काली बिल्ली : बिल्ली बहिन, नमस्ते।

सफेद बिल्ली : नमस्ते बहिन, नमस्ते।

काली बिल्ली : अच्छी तो हो?

सफेद बिल्ली : अच्छी क्या हूँ, भूखी हूँ।
खाने को कुछ ढूँढ़ रही हूँ।

काली बिल्ली : उसी खोज में मैं भी निकली।

सफेद बिल्ली : मुझे महक रोटी की आती।

काली बिल्ली : हाँ, मेरी भी नाक बताती, पास कहीं है।

सफेद बिल्ली : रखी मेज पर है वो रोटी
लपकूँ? कोई आ जाए तो .....

काली बिल्ली : तू डर; मैं तो लेने को जाती हूँ।
(काली बिल्ली लपकती है
और रोटी लेकर भागने लगती है।)

सफेद बिल्ली : ठहर, कहाँ भागी जाती है,
रोटी लेकर, रोटी मेरी।

काली बिल्ली : रोटी तेरी! कैसे तेरी? रोटी मेरी।

सफेद बिल्ली : मैं न दिखाती तो तू जाती?

काली बिल्ली : अच्छा, क्या मैं खुद न देखती?
जा, डरपोक कहीं की; जा भग, रोटी मेरी।

सफेद बिल्ली : मैं कहती हूँ, रोटी मेरी।

काली बिल्ली : मैं कहती हूँ, रोटी मेरी।

(दोनों झगड़ती हैं, 'रोटी मेरी, रोटी मेरी' कहकर एक दूसरी पर गुर्राती हैं।)

(बंदर का प्रवेश)

बंदर : क्यों तुम दोनों झगड़ रही हो?

तुम कहती हो रोटी मेरी। (सफेद बिल्ली से)

तुम कहती हो रोटी मेरी। (काली बिल्ली से) रोटी किसकी?

मैं इसका फैसला करूँगा।

चलो कचहरी, मेरे पीछे–पीछे आओ।

(बंदर रोटी छीनकर अपने हाथ में लेकर चलता है। दोनों बिल्लियाँ बंदर के पीछे–पीछे जाती हैं।)

(दूसरा दृश्य – बंदर की कचहरी)

(बंदर मेज पर बैठा है। रोटी का टुकड़ा सामने रखा है।
दोनों बिल्लियाँ मेज के सामने इधर– उधर खड़ी हैं।)

बंदर : बोलो तुमको क्या कहना है?

सफेद बिल्ली : श्रीमान्! पहले मैंने ही रोटी देखी थी, इससे रोटी पर पूरा हक मेरा बनता।

बंदर : *(काली बिल्ली से)*

बोलो, तुमको क्या कहना है?

काली बिल्ली : श्रीमान्! पहले मैं झपटी थी रोटी लेने, इससे रोटी पर मेरा हक पूरा बनता।

बंदर : बात बराबर, बात बराबर।

है मेरा फैसला कि रोटी तोड़–तोड़कर

तुम्हें बराबर दे दी जाए।

मेरे पास धरमकाँटा है।

(बंदर मेज के नीचे से तराजू निकालकर लाता है। रोटी को दो हिस्सों में तोड़कर दोनों पलड़ों पर रखता है और तराजू उठाता है। एक पलड़ा नीचे रहता है, दूसरा ऊपर।)

बंदर : यह टुकड़ा, कुछ भारी निकला।
इसमें से थोड़ा खाकर के हल्का कर दूँ। *(खाता है।)*
(फिर तराजू उठाता है। अब पहला पलड़ा नीचे हो जाता है, दूसरा ऊपर।)

बंदर : अब यह टुकड़ा भारी निकला।
अब इसको थोड़ा खा करके हल्का कर दूँ।
(फिर तराजू उठाता है। अब पहला पलड़ा ऊपर हो जाता है, दूसरा नीचे।)

बंदर : अब यह टुकड़ा भारी निकला।
मुँह थक गया बराबर करते
और तराजू उठा–उठाकर हाथ थक गया।
(बिल्लियों को बंदर की चालाकी का पता चल जाता है।)

सफेद बिल्ली : आप थक गए,
अब न उठाएँ और तराजू।

काली बिल्ली : बचा–खुचा जो हमको दे दें।
हम आपस में बाँट खाएँगी।

बंदर : नहीं, नहीं तुम फिर झगड़ोगी।
मैं झगड़े की जड़ को ही काटे देता हूँ।
बचा–खुचा भी खा लेता हूँ।
(इतना कहकर बंदर बची–खुची रोटी भी खा जाता है और तराजू लेकर भाग जाता है।)

दोनो बिल्लियाँ: आपस में झगड़ा करने से, हाथ नहीं कुछ आता।
जैसे बंदर चालाकी से, रोटी है खा जाता ।।

शब्दार्थ

महक = सुगंध

कचहरी = न्यायालय

धरमकाँटा = एक विशेष प्रकार की तौलने की मशीन जिस पर बहुत भारी वस्तुएँ, जैसे–ट्रक आदि तौले जाते हैं। यहाँ इसका अर्थ है 'तराजू'।

नीचे कुछ शब्दों के अर्थ नहीं लिखे हुए हैं। उन शब्दों के अर्थ कोष्ठक में से छाँटकर खाली स्थान में लिखो।

हक – ——————————

पलड़ा – ——————————

हड़पना – ——————————

(तराजू का पल्ला, दूसरे की वस्तु को अनुचित रूप से ले लेना, अधिकार)

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. कहानी का शीर्षक बंदर बॉट क्यों है ?

प्र.2. तुम इस नाटक को क्या नाम देना चाहोगे और क्यों ?

प्र.3. सफेद बिल्ली और काली बिल्ली दोनों रोटी पर अपना हक क्यों जता रहीं थी?

प्र.4. बंदर ने दोनों बिल्लियों से क्या कहकर स्वयं उनका फैसला करने की बात कही?

प्र.5. बंदर ने बिल्लियों के झगड़े का क्या निर्णय दिया?

प्र.6. सोचकर लिखो कि अगर बंदर न आ जाता तो बिल्लियाँ अपना झगड़ा कैसे निपटातीं।

प्र.7. बिल्लियाँ यदि बंदर से फैसला कराने से मना कर देतीं तो क्या होता?

प्र.8. अगले दिन दोनों बिल्लियों को एक तरबूज मिला। दोनों सोंचने लगीं इस तरबूज को एक कैसे बॉटा जाए। तभी फिर से बंदर आ गया। आगे क्या हुआ होगा?

प्र.9. नीचे लिखे वाक्यों में से जो वाक्य सही हों, उनके सामने 'सत्य' और जो गलत हों, उनके सामने 'असत्य' लिखो।

क– रोटी पहले सफेद बिल्ली ने देखी। ( )

ख– रोटी सफेद बिल्ली ने ही पहले लपकी। ( )

ग– सफेद बिल्ली ने काली बिल्ली को डरपोक कहा। ( )

घ– दोनों बिल्लियों ने बंदर से फैसला करने को कहा। ( )

ङ– बंदर ने तराजू पर रोटी के टुकड़े तौले। ( )

प्र.10. इन पंक्तियों को कविता के रूप में लिखो।

क. मेरा फैसला है कि रोटी तोड़–तोड़कर तुम्हें बराबर–बराबर दी जाए।

ख. तुम दोनों झगड़ क्यों रही हो ?

भाषा–अध्ययन एवं व्याकरण

- शिक्षक पाठ के किसी एक अनुच्छेद को श्रुतिलेख के रूप में बोलें और विद्यार्थी लिखकर परस्पर अभ्यास–पुस्तिकाओं का परीक्षण करें।

प्र.1 निम्नलिखित शब्दों के जोड़ों में से सही शब्द छाँटकर लिखो।

मुंह / मुँह, उठाँए / उठाएँ, तोड / तोड़, खुद / खूद।

प्र.2 नीचे लिखे शब्दों का अर्थ लिखो और उनका वाक्यों में प्रयोग करो।

महक, हक, पलड़ा, पछताना, बचा–खुचा।

प्र.3 दिए गए शब्दों का प्रयोग करते हुए नीचे लिखे वाक्यों के खाली स्थानों की पूर्ति करो।

डरपोक, लपक ली, पलड़े, न्यायालय ।

क– हमारे झगड़ों का न्याय ..... में होता है।

ख– तराजू के ..... सम पर आने चाहिए।

ग– जो ..... होते हैं, वे युद्ध–क्षेत्र से भागते हैं।

घ– चेतन ने बॉल को शॉट मारा लेकिन मोहिंदर ने बॉल .....।

पढ़ो, समझो और लिखो

मैं खाना खाऊँगा। फिर विद्यालय जाऊँगा।
इन दो वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य इस प्रकार लिखा जा सकता है –
मैं खाना खाकर विद्यालय जाऊँगा।

प्र.4. नीचे वाक्यों के जोड़े दिए गए हैं। दोनों वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य बनाओ।

क. काली बिल्ली ने रोटी ली। फिर वह भागी।

ख. कचहरी चलो। मैं वहाँ न्याय करूँगा।

प्र.5. नीचे पहली पंक्ति में लिखे शब्दों की लय से मिलते–जुलते दो–दो शब्द तालिका में से छाँटकर लिखो।

झपटी, रोटी, नाक, थोड़ा, धरम, कहना, बंदर,
सहना, चरम, खाक, सुंदर, अंदर, लिपटी, कोड़ा,
खोटी, घोड़ा, कपटी, करम, डाक, बोटी, बहना ।

रचना

शिक्षक की मदद से इस नाटक को संक्षेप में कहानी के रूप में लिखो।

योग्यता विस्तार

1. अपने साथियों की सहायता से बिल्ली और बंदर का रूप बनाकर, इस पाठ का अभिनय करो ।
2. आपस में लड़ाई का क्या परिणाम होता है, इस पर कक्षा में बातचीत करो।
3. बंदर ने जो न्याय किया, क्या वह उचित था ? तुम यदि न्याय करते तो क्या फैसला देते ?
4. यह कविता भी पढ़ो–

दो बिल्ली एक रोटी लाई, पर दो टुकड़े कर नहीं पाई।
बंदर एक वहाँ पर आया, दोनों को उसने समझाया;
लड़ना छोड़ तराजू लाओ, तौल बराबर रोटी खाओ।
बिल्ली दौड़ तराजू लाई, लगा तौलने बंदर भाई।
भारी पलड़े से कुछ टुकड़ा, लगा डालने अपने मुखड़ा।
इसी तरह सब रोटी खाई, बिल्ली बैठ रहीं ललचाई।
बोलीं आपस में तब बिल्ली, लड़ना छोड़ चलें अब दिल्ली।

3LLFYH

शिक्षण–संकेत

- पाठ को कहानी के रूप में परिवर्तित कर बच्चों को सुनाएँ।
- बच्चों से कहानी के पात्रों के अनुसार अभिनय कराएँ।
- सरल प्रश्न पूछें तथा उत्तर देने के लिए बच्चों को प्रेरित करें।

3LVC1J

पाठ 5

मीठे बोल

बोलचाल से हमारे स्वभाव का पता लगता है। कौआ और कोयल दोनों का रंग–रूप एक–सा होता है, लेकिन कोयल अपनी मीठी बोली के कारण सबको प्यारी लगती है। कौआ अपनी कर्कश बोली के कारण अप्रिय लगता है। मीठा बोलकर हम दूसरों का मन जीत लेते हैं। मीठे बोल से बढ़कर संसार में कोई दूसरी चीज नहीं होती। मीठे बोल का महत्व इस कविता में पढ़ें।

मीठा पेड़ा, मीठा खाजा,
मीठा होता हलुआ ताजा।
मीठे होते लड्डू गोल,
सबसे मीठे, मीठे बोल।।
मीठे होते आम रसीले,
पके–पके और पीले–पीले।
मीठे सेव, संतरे गोल,
सबसे मीठे, मीठे बोल।।
मीठा होता गुलगुल भजिया,
गरम जलेबी सबसे बढ़िया।
मीठे रसगुल्ले अनमोल,
सबसे मीठे, मीठे बोल।
मीठी होती खीर हमारी,
मीठी होती कुल्फी न्यारी।
मीठा होता रस का घोल,
सबसे मीठे, मीठे बोल।।

शब्दार्थ

मीठे बोल – प्रिय बोलना, नम्रता से बोलना

रसीले – रस भरे

नीचे कुछ शब्दों के अर्थ नहीं लिखे हुए हैं। उन शब्दों के अर्थ कोष्ठक में से छाँटकर खाली स्थान में लिखो।

अनमोल ——————————

न्यारी ——————————

(जिसकी कीमत न आँकी जा सके; निराली, सबसे अलग)

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. मीठे बोल से कवि का क्या तात्पर्य है ?

प्र.2. चार मीठे फलों के नाम लिखो।

प्र.3. हमें मीठे बोल क्यों बोलने चाहिए ?

प्र.4. इस कविता में रसगुल्ला को अनमोल मीठा क्यों बताया गया है ? सोचकर लिखो कि मीठा रसगुल्ला अनमोल होता है या मीठे बोल अनमोल होते हैं?

प्र.5. कठोर बोल मीठे होते हैं या कोमल बोल?

प्र.6. क और ख में से अधूरी पंक्ति लेकर कविता की पंक्तियाँ पूरी करो और लिखो।

क्र.सं.	क	ख
1.	मीठी होती	लड्डू गोल
2.	मीठा होता	मीठे बोल
3.	मीठे होते	खीर हमारी
4.	सबसे मीठे	रस का घोल

प्र.7. जलेबी, आम, लड्डू, मीठे होते हैं। नीचे बने खण्डों में कुछ खट्टी, कड़वी और तीखी चीजों के नाम लिखो।

खट्टी चीजें	कड़वी चीजें	तीखी चीजें
. . . . .	. . . . .	. . . . .
. . . . .	. . . . .	. . . . .
. . . . .	. . . . .	. . . . .
. . . . .	. . . . .	. . . . .
. . . . .	. . . . .	. . . . .

प्र 8. जब कोई तुमसे प्यार से बातें नहीं करता तब तुम्हें कैसा लगता है ?

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. नीचे दिए गए शब्दों से मिलते–जुलते तुकवाले दो–दो शब्द सोचकर लिखो।

क– न्यारे ग– ताजा ख– गोल घ– प्यारी

प्र.2. नीचे दिए गए शब्दों के विपरीत अर्थवाले शब्द लिखो।

क– मीठा ख– ताजा ग– पके घ– गरम

प्र3. पहचानकर लिखो – सबसे अलग कौन?

क– सेब, केला, पपीता, इमली ।

ख– पेड़ा, गुलाबजामुन, समोसा, जलेबी ।

ग– सूर्य, चंद्रमा, तारे, चिड़िया ।

घ– कार, गिलास, स्कूटर, साइकिल ।

प्र4. नीचे दिए गए वर्णों से चार शब्द बनाकर वाक्यों में प्रयोग करो।

आ	के	सं	म	सी	फ	ला	ता	त	ल	रा

रचना

- मीठे बोल कविता पढ़कर तुमने क्या समझा ? अपने शब्दों में लिखो।

योग्यता विस्तार

- इस दोहे को पढ़ो, याद करो और इसका अर्थ समझकर कक्षा में बताओ।

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करै, आपहु शीतल होय।।

3M5837

शिक्षण–संकेत

- कविता का सस्वर वाचन करें और अनुकरण वाचन कराएँ।
- दिए गए चित्रों पर बच्चों से चर्चा कराएँ।
- स्वाद में मीठी वस्तुओं के नाम पूछें
- छत्तीसगढ़ी व्यंजनों की सूची बनवाएँ।
- मीठे बोल और कड़वे बोल के बारे में बच्चों से चर्चा करें।

पाठ 6

कबूतर और मधुमक्खियाँ

मुसीबत में एक दूसरे की सहायता करना हमारा धर्म है। पशु–पक्षी भी कभी–कभी यह धर्म निभाते हैं। यह कहानी हमें सिखाती है कि हम भी मुसीबत में फँसे अपने साथियों की सहायता करें।

3HE44U

किसी नदी के किनारे एक पेड़ था। पेड़ पर मधुमक्खियों का छत्ता था। छत्ते में बहुत–सी मधुमक्खियाँ रहती थीं। उनमें एक रानी मक्खी भी थी।

एक दिन की बात है। रानी मक्खी छत्ते से बाहर निकलते ही नदी में गिर गई। उसने पानी से निकलने का बहुत प्रयत्न किया, पर वह निकल न सकी। वह नदी की धारा में बहने लगी। नदी के किनारे एक कबूतर पानी पी रहा था। उसे मक्खी पर बहुत दया आई। वह उसे बचाने की बात सोचने लगा। अचानक उसे एक उपाय सूझा। वह तेजी से उड़कर पेड़ के नीचे पहुँच गया। पेड़ के नीचे से एक सूखा पत्ता लेकर उसने अपनी चोंच में दबाया और नदी के किनारे–किनारे उड़ने लगा। थोड़ी ही दूर पर उसे रानी मक्खी दिखाई दी। उसने पत्ता मधुमक्खी के बिल्कुल आगे डाल दिया। मक्खी पत्ते पर चढ़ गई। पत्ता धीरे–धीरे किनारे से लग गया। रानी मधुमक्खी डूबने से बच गई।

कबूतर का ध्यान पत्ते पर ही था। उसने देखा कि मधुमक्खी तो बिल्कुल हिलती–डुलती नहीं। वह चोंच में पत्ता दबाकर, पेड़ के नीचे आ गया। कुछ देर तक वह इस बात की प्रतीक्षा करता रहा कि मधुमक्खी हिलती–डुलती है या नहीं। मधुमक्खी अब कुछ हिलने लगी। वह धीरे–धीरे पत्ते पर चढ़ने भी लगी। उसने कबूतर

की ओर देखा। कबूतर को विश्वास हो गया कि अब मक्खी बच जाएगी। रानी मक्खी धीरे–धीरे उड़कर अपने छत्ते में चली गई। रानी मधुमक्खी के छत्ते में न होने से सभी मधुमक्खियाँ परेशान थीं। उसको छत्ते में आया देखकर सभी को बड़ी प्रसन्नता हुई।

कुछ दिनों के बाद एक शिकारी उधर आया। वह नदी के किनारे घूम–घूमकर चिड़ियों का शिकार करने लगा। उसके भय से सभी पक्षी इधर–उधर छिपने लगे। जिस कबूतर ने रानी मक्खी को बचाया था, वह भी उड़ता हुआ उसी पेड़ के पास आया। डर के मारे वह पेड़ के पत्तों में छिप गया। रानी मक्खी ने उस कबूतर को देखा तो तुरन्त मधुमक्खियों से कहा, "हमें किसी भी तरह इस कबूतर की रक्षा करनी चाहिए।"

रानी मधुमक्खी की बात सुनते ही कई मधुमक्खियाँ छत्ते से निकल पड़ीं। उधर शिकारी ने कबूतर को देख लिया था। वह उसकी ओर निशाना साध ही रहा था कि मधुमक्खियाँ तेजी से उसकी ओर झपटीं। उन्होंने कई जगह शिकारी को काट खाया। शिकारी घबरा गया। उसका निशाना चूक गया। कबूतर ने तीर की सनसनाहट सुनी। उसने भय के मारे अपनी आँखें बंद कर लीं। थोड़ी देर बाद उसने अपनी आँखें खोलीं तो देखा, शिकारी अपना सिर पकड़कर बैठा है। उसे कुछ मधुमक्खियाँ उड़ती हुईं पेड़ की ओर आती दिखाई दीं।

कबूतर सब कुछ समझ गया। उसने मधुमक्खियों की ओर देखा और मन–ही–मन उनको धन्यवाद दिया।

शब्दार्थ

प्रयत्न	–	कोशिश	परेशान	–	चिंतित
प्रतिक्षा	–	इंतज़ार	राह देखना	–	बाट जोहना
छटपटाना	–	बेचैन होना, व्याकुल होना			

प्रश्न और अभ्यास

प्र. 1. मधुमक्खियाँ कहाँ रहती थीं ?

प्र. 2. रानी मक्खी किस मुसीबत में फँस गई थी ?

प्र. 3. कबूतर क्यों डर गया था ?

प्र. 4. मधुमक्खियों ने कबूतर की कैसे सहायता की ?

प्र. 5. यदि कबूतर मधुमक्खी की सहायता न करता तो क्या होता ?

प्र. 6. तुमने मधुमक्खियों का छत्ता लटका हुआ देखा होगा। पता करो कि मधुमक्खियाँ अपने छत्ते में शहद कैसे इकट्ठा करती हैं ?

प्र. 7. तुमने अपने आसपास किसी जानवर या पक्षी का शिकार होते हुए देखा या सुना होगा। तुम्हें क्या लगता है कि लोग इनका शिकार क्यों करते होंगे ? तुम्हारे विचार से यह सही है या नहीं ?

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्यों के खाली स्थान भरो।

(भिनभिना, खटखटा, गड़गड़ा, गिड़गिड़ा)

क. भिखारी ———— रहा था।

ख. मेहमान दरवाजा ———— रहा था।

ग. मक्खियाँ मिठाई पर ———— रही थीं।

घ. बादल ———— रहे हैं।

समझें

लड़का	–	लड़के	–	लड़कों
कमरा	–	कमरे	–	कमरों
गमला	–	गमले	–	गमलों

'लड़का' का अर्थ है एक लड़का। 'लड़कों' का अर्थ है बहुत से लड़के।
'लड़के/लड़कों' बहुवचन में आता है।

पढ़ो :– क. छत्ते में बहुत–सी मधुमक्खियाँ रहती थीं।

ख. नदी के किनारे एक सीधा–सादा कबूतर पानी पी रहा था।

ग. पेड़ के नीचे एक सूखा पत्ता पड़ा था।

अब समझो–

क. छत्ते में कितनी मधुमक्खियाँ रहती थीं ?

ख. नदी में पानी पीने वाला कबूतर कैसा था ?

ग. पेड़ के नीचे कैसा पत्ता पड़ा था ?

पहले वाक्य में 'बहुत–सी' शब्द मक्खियों की विशेषता बता रहा है। दूसरे वाक्य में 'सीधा–सादा' कबूतर की विशेषता बता रहा है। तीसरे वाक्य में 'सूखा' शब्द 'पत्ता' की विशेषता बता रहा है। विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

प्र.2 नीचे दिए गए एकवचन शब्दों को बहुवचन में बदलकर लिखो।

झोला, मुर्गा, मेला, ठेला, बोरा, बकरा, कुत्ता।

प्र.3 नीचे लिखे वाक्यों को पढ़ो। इनमें कुछ त्रुटियाँ हैं। उन्हें दूर करके अनुच्छेद फिर से लिखो।

नदी के कीनारे जामून का एक पेड था। उस पर एक बंदर रहता था। वह मिठे–मिठे जामून खाता था। एक मगर से उसकी दोसती हो गई थी। बंदर मगर को भी जामून खीलाता था। मगर पानी में रहता था। उसकी पतनि को जामुन बहुत पसंद था।

वाक्यों को पढ़ो और समझो

अ	ब
क. चूहे ने रोटी खा डाली।	क. चूहों ने कपड़ों को कुतर डाला।
ख. बछड़े ने रस्सी तोड़ डाली।	ख. पेड़ के नीचे बछड़े बैठे हैं।
ग. बस्ता बहुत भारी है।	ग. बाजार में अच्छे–अच्छे बस्ते मिलते है।

इन वाक्यों में रेखांकित शब्द एकवचन में हैं और ब खंड में रेखांकित शब्द बहुवचन में है।

प्र.4 'चूहा', 'कुत्ता', 'लड़का' शब्दों का प्रयोग एकवचन और बहुवचन रूप में अलग–अलग वाक्यों में करो।

रचना

प्र.1. कबूतर का चित्र बनाओ और उसमें रंग भरो।

प्र.2. इस कहानी को अपने शब्दों मे लिखो।

योग्यता विस्तार

यह भी जानो–

- मधुमक्खियों का छत्ता मोम का बना होता है।
- मधुमक्खियों द्वारा एकत्र किया गया फूलों का रस ही शहद या मधु रस कहलाता है।
- एक छत्ते में खूब सारी मक्खियाँ रहती हैं।
- मधुमक्खियों के डंक होते हैं, जिनके चुभने से बहुत पीड़ा होती है।
- भूलकर भी मधुमक्खियों के छत्ते पर पत्थर नहीं मारना। ये बिखरकर इधर–उधर उड़ती हैं । उस समय ये क्रोध में किसी को भी काट सकती हैं ।

शिक्षण–संकेत

- पाठ का आदर्श वाचन करें और अनुकरण वाचन कराएँ।
- प्रस्तुत पाठ में आए हुए एकवचन एवं बहुवचन के शब्दों की सूची बच्चों से बनवाएँ।
- कक्षा में 3 या 4 समूह बनाकर कहानी पर चर्चा कराएँ और अपना अनुभव सुनाने के लिए कहें।
- पक्षियों के नामों की सूची बनवाएँ।

पाठ 7

चाँद का कुरता

शीत ऋतु में बहुत ठंड पड़ती है। इससे बचने के लिए सब लोग गरम कपड़े पहनते हैं। पशु–पक्षियों को भी ठंड लगती होगी। इस कविता में चंद्रमा एक बच्चे के रूप में बताया गया है। वह भी ठंड से बचना चाहता है। इसके लिए वह अपनी माँ से कुछ माँग रहा है। इस पाठ में चन्द्रमा और उसकी माँ के बीच हुई बातचीत का वर्णन पढ़ें।

हठ कर बैठा चाँद, एक दिन माता से यह बोला।
सिलवा दो माँ, मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला।।
सन्–सन् करती हवा, रात–भर जाड़े से मरता हूँ।
ठिठुर–ठिठुरकर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ।।
आसमान का सफर और यह मौसम है जाड़े का।
न हो अगर तो ला दो कुर्ता ही, कोई भाड़े का।।
बच्चे की बातें सुनकर बोली उससे यह माता।
सचमुच जाड़े का मौसम तो तुझको बहुत सताता।।
जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ।
एक नाप में कभी नहीं, तुझको देखा करती हूँ।।

कभी एक अंगुल–भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा।
बड़ा किसी दिन हो जाता है, और किसी दिन छोटा।।
घटता–बढ़ता रोज किसी दिन, ऐसा भी करता है।
नहीं किसी की आँखों को तू, दिखलाई पड़ता है।।
अब तू ही यह बता, नाप तेरा किस रोज़ लिवाएँ ?
सी दूँ एक झिंगोला, जो हर रोज बदन में आए।।

शब्दार्थ

हठ – जिद
झिंगोला – झबला
यात्रा – सफर

नीचे कुछ शब्दों के अर्थ नहीं लिखे हुए हैं। उन शब्दों के अर्थ कोष्ठक में से छाँटकर लिखो।

भाड़ा .....
सलोने .....
बदन .....
ठिठुरकर .....

(सुंदर, किराया, ठंड से काँपकर, शरीर)

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. हमें चाँद कब दिखाई देता है?

प्र.2. चाँद ने माँ से किस चीज की मांग की ?

प्र.3. ऊनी कपड़े किस मौसम में पहने जाते हैं ?

प्र.4. चाँद कब दिखाई ही नहीं देता ?

प्र.5. पूरा गोल चाँद कब दिखता है ?

प्र.6. माता ने चाँद को झिंगोला देने में क्या कठिनाई बताई ?

प्र.7. चाँद कब घटता और कब बढ़ता है ?

प्र.8. पूर्णमासी और अमावस्या के दिन चाँद की क्या स्थिति रहती है ?

प्र.9. चाँद पर आधारित किन त्यौहारों को मनाया जाता है?

क– कार्तिक मास की अमावस्या को .....

ख– फागुन की पूर्णिमा को .....

ग– सावन की पूर्णिमा को .....

घ– रमजान के रोजे पूरे होने के बाद मनाया जाने वाले त्यौहार .....

प्र.10. अगर चींटी और हाथी के लिए झबला बनवाया जाए, तो क्या बन पाएगा? कारण बताते हुए उत्तर लिखो।

प्र.11. जैसे चन्द्रमा ने अपने लिए झिंगोला दिलवाने की जिद की, इसी तरह तुम भी अपनी माँ से किन – किन चीजों के लिए लिए जिद करते हो ?

इनमें से कौन सी जिद पूरी होती है और कौन सी नहीं, नीचे तालिका में लिखो।

जिद	पूरी होती है	पूरी नहीं होती है
मैं खेलने जाऊँगा	. . . . .	. . . . .

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

- कक्षा के दोनों समूह परस्पर शब्दों के अर्थ और उनका वाक्य–प्रयोग करने की गतिविधि करें।
- शिक्षक एक अनुच्छेद श्रुतिलेख के लिए बोलेंगे और विद्यार्थियों से पूर्व के अनुसार परीक्षण संबंधी कार्य कराएँगे।
- रवि पहले कमज़ोर था किंतु आजकल ताकतवर हो गया है।

  इस वाक्य में 'कमजोर' का उल्टे अर्थवाला शब्द 'ताकतवर' है।

प्र.1 नीचे लिखे गए शब्दों के उल्टे अर्थ वाले (विरोधी) शब्द लिखो व एक–एक वाक्य बनाओ।

क– जाड़ा ख– मोटा ग– रात घ– बड़ा ङ– स्पष्ट च– दूर

प्र.2. नीचे दिए गए शब्दों को शुद्ध करके लिखो।

जादु, दीखलाई, कुसल, मौसिम, आसमन।

प्र.3. पढ़ो और समझो।

चंदा – गंदा, मंदा

इसी तरह नीचे दिए गए शब्दों से मिलते–जुलते दो–दो शब्द लिखो।

क– माता ख– मोटा ग– नाप घ– डरती

समझो

क. "नमन गाना गा रहा है।" ख. "रचना खेल रही है।"

क वाक्य में गाना गाने का काम हो रहा है। ख वाक्य में खेलने का काम हो रहा है। **"जिन शब्दों से किसी काम के करने या होने का ज्ञान होता है, उन्हें क्रिया कहते हैं।"**

प्र.4. पाठ के अनुसार चांद कभी एक अंगुल भर चौड़ा तो कभी एक फुट मोटा हो जाता था। आओ देखें इनमें कौन – कौन सी चीजें मापी जाती है –

इकाई	चीजों के नाम
लीटर मीटर किलोग्राम	

प्र.5. नीचे लिखे वाक्यों में क्रिया शब्दों को चुनकर लिखो ।

क– मैं अपने दोस्त को किताब दूँगा।

ख– दर्जी कपड़ा सिल रहा था।

ग– माँ पुस्तक पढ़ रही है।

रचना

प्र.1. चाँद, सूरज व सितारों का चित्र बनाकर उसके बारे में अपने विचार लिखो।

प्र.2. चाँद और माँ की कहानी बातचीत के रूप में लिखो।

प्र.3 नीचे लिखी कविता की पंक्तियों के शब्द उलट–पुलट गए हैं। शब्दों को सही स्थान पर रखकर कविता की पंक्तियाँ बनाओ।

घण्टा	बोला	मदरसे	चलो
जल्दी	अपने	घर से	निकलो
कपड़े	पहनो	ले लो	बस्ता
घर से	निकलो	निकलो	निकलो

योग्यता विस्तार

- चंदा मामा की कोई अन्य कविता खोजो, पढ़ो और कक्षा में लिखकर लगाओ।

- जो रोज छोटा–बड़ा हो, उसके लिए कपड़े सिलवाना संभव नहीं होता। सोचकर बताओं कि चांद की माँ का कहना ठीक था या गलत।

- तुम्हे जब ठण्ड लगती है तो गरम कपड़े पहनते/ओढ़ते हो। जिनके पास गरम कपड़े नहीं होते वे ठण्ड से कैसे बचते हैं।

3N6R9S

शिक्षण–संकेत

- कविता का सस्वर वाचन कर दो–तीन बार कक्षा में सुनाएँ।
- बच्चों से भी कविता का सस्वर वाचन करवाएँ, उनके उच्चारण पर विशेष ध्यान दें।
- कविता में आए चित्र पर बच्चों से बातचीत करें।
- बच्चों से कविता के भावार्थ पर बातचीत करें।

पाठ 8

चलव खेल खेलबो

3NFMBF

पाठ परिचय– लइका मन ल खेलइ–कुदइ बने लागथे। कइसनो बेरा–कुबेरा, घाम–छाँव, जाड़–सीत चाहे पानी बरसत राहय, ओमन खेले बर नइ छोड़ँय। भूख लागही तभो सँगी–सँगवारी मन सँग खेलहिच। जुरमिल के खेलइ बने बात आय। खेल म हार–जीत होबेच करथे, फेर हार जाए म दुख झन मानय। कोनो किसम के छल–बल करके जीत जाय ले हार जाय तेने बने।

मुँधियार होतेच खंभा मन के लट्टू मन बग–बग ले बरगे। तहाँ ले बिमला ह गुलाबो, चमेली, आरती, बबलू, अमित ल गोहार पार के बलइस ''आवव अँधियारी–अँजोरी खेलबो''। ओहा घर के चौरस चौरा म आके ठाड़ होगे।

थोरकेच म लइका मन बिमला के तीर म आगे। ओहा लइका मन ल पूछिस– ''चलव बतावव, आज सबले पहिली का खेल खेलबो''? सबो कलेचुप होगे। बिमला फेर पूछिस। त गुलाबो कहिस–''बिल्लस खेलबो''। बबलू कहिस–''चलव खुडुवा खेलबो''। आरती किहिस ''चलव नूनसूर खेलबो''। जे लइका ते ठन खेल के नाँव बतइन।

त बिमला कहिस–'' चलव आज हमन अँधियारी–अँजोरी खेलबो''। अतका म आरती किहिस–''बिमला हमन तो ए खेल खेल डरबो फेर ए रीता ह नइ खेल सकय। एला बताय बर लगही। त आन लइका मन पूछिन–''रीता ह कोन ए आरती''?

ओ कहिस ''ए ह मोर ममा के बेटी आय। एमन मुम्बई म रहिथें।'' बिमला कहिस – ''आरती , तभे मँय ह गुनत रेहेव, ए नवा सँगवारी ह कोन आय?'' चल खेलत–खेलत हमन रीता ल ए खेल ल सिखो देबो।''

तहाँ ले बिमला कहिस– ''देखव बहिनी हो ! मँय हा अँधियारी ..... कइहूँ तहाँ ले दँउड़ के

शिक्षण संकेत– गाँव के लइका मन कोन–कोन खेल खेलथें? ऊँकर बारे म चर्चा करँय। गुरुजी लइका मन ले खेल अउ ओकर जिनिस मन के सूची बनवावँय। पत्र–पत्रिका म छपे फोटू ल सकेले बर काहँय। खेल फोटू जमा करावँय। संज्ञा–सर्वनाम, विशेषण के अवधारणा (मायने) करावँय।

जउन–जउन मेर अँधियार हे तउन–तउन मेर जाके ठाड़ हो जहू। कहुँ अंजोरी कइहूँ त अँजोर मेर जाके ठाड़ हो जहू।

रीता पूछिस – ''दीदी ! मेहा कहुँ झट कन नइ जा पाहूँ त का होही ? बिमला कहिस दाम देवइया ह तोला छू दिही, तहाँ ले तोला दाम दे बर परही। तँय ह देखबे, कोन अँधियार म खड़े हे? कोन अँजोर म खड़े हे ?''

आरती कहिस –''चलव आज मँय ह दाम देवत हँव।'' अउ चिल्लइस ''अँधियारी''.....। ''तहाँ सबो लइका मन झटकन अँधियार जघा म जा के ठाड़ होगे। फेर रीता हा अँजोर म ठाड़े रहिगे। हुरहा दउड़े बर ओला नइ सूझिस।

तहाँ ले आरती ह झटले रीता ल छू दिस। ओहा रीता ल कहिस– ''चल अब तँय ह दाम दे।'' त रीता ह दाम दीस। कभू अँधियारी काहय त कभू अँजोरी काहय। लइका मन झटले जघा पोगरा लँय। अड़बड़ बेर होगे, रीता कोनो ल नइ छू सकिस। ओ हा थक गे।

बिमला कहिस–''चलव अब दूसर खेल खेलबो। कइसे रीता, तोला खेल बने लगिस ? ''बिमला बहिनी! मँय ह भले ए खेल म आज हार गेंव, फेर मोला खेल बने लगिस।''

''काबर बने लगिस तेला बता तो रीता। तेंहा तो मुम्बई शहर म आनी–बानी के खेल खेलत होबे ?''

''देख बिमला बहिनी, हमर शहर के लइका मन किसम–किसम के खेल भले खेलथें। फेर ओमा दुनिया भर के डमडमा हे। ओकर बर अलगे जघा चाही। खेल के जिनिस बिसा, सँगवारी खोज। खेल सिखइया घलो लगथे। ओला फीस तको देय बर लगथे।'' रीता कहिस।

''रीता बहिनी, हमर गाँव के खेल मन ल खेले बर सुभिता होथे। कइ ठन खेल मन म काँही जिनिस नइ लागय। सिरिफ बोल बता के, गीत गाके, दउड़ भाग के, छू के खेल लेथन । बिमला अतका कहिस तहाँ ले बबलू किहिस–''दीदी, तुमन तो गोठियाय बताय बर धर लेव। चलव ''अटकन–बटकन'' खेलबो।

हव बबलू ! चलव इही ल खेलबो। काबर के ठाड़े–ठाड़े खेलत ले गोड़ ह पिरा गे हे। बिमला ह किहिस तहाँ ले सबो झन दुनो हथेरी ल पट रखिन। आरती ह एक–एक झन के हथेली उपर अपन माई अँगरी ल छुवावत ए दे गीत के एक–एक आखर ल गाइस–

अटकन–बटकन दही चटाका ?
लउहा लाटा बन के काँटा।
सावन मा बुंदेला पाके,
पाका–पाका बेल खाबो।
बेल के डारा टूट गे,
भरे कटोरा फूट गे।
चल–चल बेटी गंगा जाबो,

गंगा ले गोदावरी।
आठ नाँगा पागा,
गोलार सिंग राजा।

सब झन बड़ खुश हो गें ।

त चमेली ह रीता ल कहिस–''कइसे रीता! तोला हमर संग खेले म बने लगथे?'' ''हाँ चमेली बहिनी! मोला तो तुँहर खेल मन बनेच लागथे। फेर का करबे शहर के लइका मन आनी– बानी के खेल म भुलाय रहिथें।'' रीता ह कहिस ।

''सुन रीता ! अब तो हमर राज म कइ ठन खेल मन ल स्कूल के खेल म रख ले गेहे।'' बिमला ह बताइस। ''कोन खेल ल दीदी ?'' बबलू ह पूछिस। ''तँय ह नइ जानस ?''

बिमला कहिस अउ बताइस–''फुगड़ी ल। ये खेल ल खेले म बड़ निक लागथे।

रीता कहिस–''चलव फुगड़ी खेल के देखाववं''। जम्मो झन उखरु बइठगें अउ अपन एक हाँथ ल भुइयाँ म लिपे सरिख गोल–गोल रेंगावत ए दे गीत ल गइन –

गोबर दे बछरू गोबर दे,
चारो खूँट ल लीपन दे ।
चारो देरानी ल बइठन दे,
अपन खाथे गूदा–गूदा।
हमला देथे बीजा.....।
ए बीजा ल का करबो,
रहि जाबो तीजा।
तीजा के बिहान दिन,
घरी–घरी लुगरा।
पींव पींव करे मजूर के पिला,
हेर दे भउजी कपाट के खीला।
एक गोड़ म लाल भाजी,
एक म कपुर।
कतेक ल मानँव मँय देवर–ससुर।।
फुगड़ी फुहूँ रे–फुगड़ी फू....।

बबलू बीचे म ढलँग गे, ओकर फुगड़ी पूरा नइ होइस। चमेली, आरती अउ बिमला मन फुगड़ी म बिधुन होगे, तहाँ ले अमित कहिस.. चलव दीदी। अब जादा रात होगे। हमर दाई–ददा खिसियाहीं।''

रीता ल ''फुगड़ी'' खेल बने लगिस। ओहा बिमला ल पूछिस– ''इहाँ अड़बड़ किसम के खेल हे का ? ''त बिमला ह बताइस–'' रीता, इहाँ कई किसम के खेल हे। जइसे भोटकुल, तिरी पासा, खीला गड़उल, डंडा–पचरंगा, घोड़ा हे बादाम छाई, चूरी लुकउल, सगा–पहुना, रामचिड़िया, खुडवा, छू–छूवउल, रस्सी, पोसमपाय, राजा–रानी, बिस–अमरित, नदी–पहाड़, गोबर, डंडा सूर, चर्रा, कुकरा पाल।''

ओतके म रीता के मामी ओला खोजत आगे। बियारी के बेरा होगे राहय। काली संझा फेर सकलाबो कहिके लइका मन अपन–अपन घर कोती दउड़गें।

कठिन शब्द मन के हिन्दी मायने –

मुँधियार	=	अँधेरा हो जाना
बग–बग	=	चमचमाते
अँजोरी	=	उजाला
कलेचुप	=	चुपचाप
गुनत	=	सोचते हुए
झटकन	=	जल्दी
हुरहा	=	अचानक
बिधुन	=	मगन
सबो	=	सभी
लउहालाटा	=	जल्दबाजी
पाका	=	पक्का
मेकरा	=	मकड़ी
देरानी	=	देवर की पत्नी
गूदा	=	फलों का वह नरम भाग, जिसे खाया जाता है।
लुगरा	=	साड़ी
खिसियागे	=	क्रोधित हो गया/गई

प्रश्न अउ अभ्यास

गतिविधि–

कक्षा के दू दल ओसरी–पारी मुँहअखरा प्रश्न उत्तर करही। तेखर पाछू गुरुजी घलो, दूनो दल के लइका मन ले प्रश्न पूछही। प्रश्न अइसे हो सकथें :–

(क) लइका मन ल जादा बने का लगथे – खेलइ के पढ़इ ?

(ख) 'अटकन बटकन' खेल म भुइयाँ म का ला मढ़ाथे – हथेली ल के कोहनी ल ?

बोध प्रश्न–

प्रश्न (1) ये प्रश्न मन के जवाब लिखव–

(क) लइका मन पहिली का खेलिन ?

(ख) अँधियारी–अँजोरी खेल कइसे खेले जाथे ?

(ग) 'फुगड़ी' ल कइसे खेले जाथे ?

(घ) अटकन–बटकन के खेल कइसे खेले जाथे ?

प्रश्न (2) तुमन अपन सँगवारी सँग का–का खेल खेलथव? कोनो तीन खेल के नाँव लिखव।

प्रश्न (3) ये प्रश्न के जवाब लिखव –

(क) खेल म हार जाए ले तुमन ल कइसे लागथे? ओतका बेरा तुमन का सोचथव ?

(ख) खेल म तुमन जीत जाथव त तुमन ल कइसे लागथे ? ओ समे म तुमन का सोचथव?

(ग) खेल खेलत बेरा जीत हार जादा महत्तम के होथे के खेलइ ? कारन बतावव।

भाषा अध्ययन अउ व्याकरण

प्रश्न 1– ए शब्द मन कस अउ दूसर शब्द लिखव–

जइसे – दल – बल, चल

गोहार – .....।

खेलत – .....।

दाम – .....।

गुनत – .....।

प्रश्न 2– ये शब्द मन के उल्टा अर्थ वाले शब्द लिखव–

अँधियार – .....।

झटकन – .....।

पाका – .....।

हार – ..... ।

अड़बड़ – ..... ।

बने – ..... ।

पूरा – ..... ।

पढ़व, समझव अउ लिखव –

(क) आरती ह पहिली दाम दिस।

(ख) ओहा थोरिक म थक गे।

(ग) ओहर कहिस, "मँय ह थक गेंव।"

(घ) बबलू ह कहिस, "तँय ह बइठ जा।

लकीर खिंचाय शब्द मन ल ध्यान लगा के देखव, 'ख' वाक्य मे 'ओहा' शब्द के प्रयोग 'आरती' बर होय हे। 'ग' वाक्य म 'ओहर' अउ 'घ' वाक्य में 'तँय ह' शब्द घलोक आरती बर प्रयोग करे गे हे। कहूँ सबो जघा "आरती" शब्द के प्रयोग होतिस त वाक्य बने नइ लगतिस। देखव :–

'आरती' ह पहिली दाम दिस। 'आरती' थोरिक में थक गे। 'आरती' ह कहिस– "आरती तो थक गे।" बबलू कहिस– "आरती बइठ जा।' वाक्य मन ल सुग्घर बनाए बर 'ओहा' 'ओहर' 'तँय हा' 'ओखर' के प्रयोग होय हे। 'संज्ञा' के बदला म प्रयोग करे गे शब्द ह 'सर्वनाम' कहाथे।

प्रश्न (3) खाल्हे म लिखाय वाक्य मन के खाली जघा म ओहा, ओहर, ओला, ओखर शब्द लिखव–

रीता अटकन–बटकन खेलत रहिस।

..... **अपन हथेली ल भुइयाँ म मड़इस।**

..... **पहिली बेर एला खेलत रहिस।**

..... **खेले बर नइ आवत रहिस।**

..... **हथेली घलोक पुक गे।**

प्रश्न (4) खाल्हे के शब्द मन के मायने नइ लिखे हे। ओखर मायने कोष्टक ले छाँट के लिखव–

दाम देना = ... ।

उखरू = ... ।

गोहार = ... ।

निक = ... ।

(पंजा के भार, माड़ी मोर के बइठई, चिल्लई, बने, खेल ल आगू बढ़ाना)

समझव –

(क) बिमला चौरस चौरा म ठाड़ होगे।

(ख) सबो झन ल बड़ निक लागिस।

(ग) थोरिक बेर म सबोझन थक गें।

'क' वाक्य म 'चौरा' संज्ञा के विशेषता 'चौरस'' शब्द, ''ख'' वाक्य म ''निक'' संज्ञा के विशेषता ''बड़'' शब्द, ''ग'' वाक्य म ''बेर'' संज्ञा के विशेषता ''थोरिक'' शब्द ह बतावत हे। चौरस, बड़ अउ थोरिक बिशेषता बतइया शब्द आय। एला विशेषण कहिथें।

संज्ञा अऊ सर्वनाम के विशेषता बतइया शब्द विशेषण कहाथे।

प्रश्न (5) खाल्हे म लिखाय शब्द मन ल पढ़व अउ छाँट के डब्बा म लिखव

चमेली, ओला, सुग्घर, चौंरस, बड़, थोरिक, मँय हा, ओखर, तँय हा, गंगा, बबलू, डंडा

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण

3NPID3

योग्यता विस्तार –

- तुमन ल जेन खेल पसंद हे, ओकर बारे म आठ वाक्य लिखव।
- सोचव अउ बतावव, कहूँ तुहर पारा–परोस के लइका मन तुमन ल अपन संग नइ खेलाही त तुमन ल कइसे लागही?
- खेल ले का–का फायदा हे? एक–एक ठन फायदा ल बतावव।
- आने–आने खेल के गीत ल अपन, कापी म लिखव अउ कक्षा म सुनावव।
- घर भितरी के खेल अउ बाहिर के खेल मन के अलग–अलग नाम लिखव।

3NYEEQ

पाठ 9

आदिमानव

इस चित्रकथा में आदिमानव की कहानी है। वे हजारों वर्ष पहले घने जंगलों में बिना कपड़े पहने रहते थे और जानवरों का कच्चा मांस खाते थे। धीरे–धीरे उन्होंने आग जलाना, खेती करना सीखा। वे गुफाओं में रहने लगे। आदिमानव ने किस तरह उन्नति की, यह इस पाठ में पढ़ेंगे।

राधा ने अपनी एक किताब दादा जी को दिखाते हुए पूछा, "दादा जी, इस किताब में लिखा है कि आदि–मानव जंगलों में रहते थे। वे नंगे रहते थे और जानवरों का कच्चा मांस खाते थे? क्या यह सही है?

1

दादा जी ने बताया, "हाँ बेटी, यह सही है। आदि–मानव जंगलों में रहते थे। वे बिना कपड़े पहने घूमते थे, कंदमूल और जानवरों का कच्चा मांस खाते थे।

2

उस समय लोगों को आग की जानकारी नहीं थी। काफी समय बाद उन्होंने पत्थर रगड़कर आग जलाना सीखा।

3

आग की जानकारी होने पर उन लोगों ने मांस भूनकर खाना शुरू किया। आग जलाकर वे जानवरों से अपनी रक्षा भी करते थे।

4

उस समय आदिमानव एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते थे। वे पत्थरों के हथियार प्रयोग में लाते थे।

5

वे फलों को खाकर उनके बीज फेंक देते थे। उन्होंने नए पौधे उगते देखे। धीरे–धीरे उन्होंने खेती करना सीख लिया।

6

कई कार्यों में अपनी सहायता के लिए उन्होंने जानवरों से सहायता लेना शुरू किया।

7

खेती प्रारम्भ करने पर, फसल लेने से काटने तक उनको एक जगह रहना पड़ता था। इस तरह गाँव बसने लगे।

8

उसके बाद आदिमानव ने पहिए की खोज कर ली।

9

बाद में उन लोगों को धातु का ज्ञान हुआ। वे लोहे, पीतल के हथियार और बर्तन बनाने लगे।

10

गुफाओं में रहते हुए उन्होंने चित्र बनाना शुरू कर दिया।

11

दादा जी ने बताया, 'बेटी मनुष्य ने इसी तरह प्रयास करते–करते अपना विकास किया है। आज भी आदिमानव की तरह दुनिया में लाखों लोग रह रहे हैं। विकास का यह क्रम अभी भी जारी है।'

12

शब्दार्थ

आदिमानव = शुरू के आदमी

कंदमूल = जमीन के अंदर उगने वाली वनस्पतियाँ जैसे शकरकंद, मूली, गाजर, आलू आदि।

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. आदिमानव का रहन–सहन कैसा था ?

प्र.2. गाँव व शहरों का विकास कैसे हुआ ?

प्र.3. आग जलाना सीखने पर आदि मानव को क्या लाभ हुआ ?

प्र.4. आदिमानव एक स्थान से दूसरे स्थान पर क्यों घूमते रहते थे ?

प्र.5. वे कच्चा मांस क्यों खाते थे ?

प्र.6. आदिमानव ने खेती करना कैसे सीखा ?

प्र.7. आदिमानव ने हथियार बनाना क्यों सीखा ?

प्र.8. यदि आग की खोज नहीं हुई होती तो तुमको क्या–क्या परेशानी होती ?

प्र.9. आदि मानव पत्थरों को आपस में रगड़कर आग जलाते थे। आजकल आग जलाने के क्या–क्या तरीके हैं।

प्र.10. आदि मानव गुफाओं में रहते थे। तुम किस प्रकार के घर में रहते हो ? दोनों प्रकार के घरों में क्या अंतर है ?

आदि मानव का घर	तुम्हारा घर

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

यहाँ हम सीखेंगे • *समान अर्थ वाले शब्दों की जानकारी* •*समान अर्थ वाले शब्दों की जोड़ी बनाना* • *अशुद्ध शब्द को शुद्ध करना* • *शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करना* ।

- कक्षा के दोनों समूह परस्पर शब्दों के अर्थ और उनका वाक्य–प्रयोग करने की गतिविधि करें।
- शिक्षक एक अनुच्छेद श्रुतिलेख के लिए बोलेंगे और विद्यार्थियों से पूर्व के अनुसार परीक्षण संबंधी कार्य कराएँगे।

प्र.1. इन शब्दों को पढ़ो व इनका प्रयोग करके एक–एक वाक्य बनाओ।

आश्चर्य, पूर्वज, इकट्ठा, वनांचल, झुंड ।

प्र.2. इन शब्दों को सुधारकर लिखो।

आर्श्चय, पूवर्ज, गाव, सथाई, चित्तर

प्र.3 दाईं ओर बने गोलों में कुछ नाम लिखे हैं और बाईं ओर के गोलों में उनकी विशेषता बताने वाले शब्द। इनकी सही जोड़ियाँ बनाओ।

हज़ारों कच्चा आदि   मानव मांस जंगल

एक लाखों घने   लोग वर्ष समय

प्र.4. इन वाक्यों को क्या, कब, कैसे और क्यों का प्रयोग कर, प्रश्नवाचक वाक्यों में बदलो।

क– राधा को आश्चर्य हुआ।

ख– आदिमानव कच्चा मांस खाते थे।

ग– आदिमानव ने खेती करना व पशुओं को पालना प्रारंभ किया।

घ– बहुत समय बाद गाँव व शहरों का विकास हुआ।

प्र.5 ने, को, की, में का प्रयोग करके वाक्य पूरे करो।

क. दादा जी ने राधा .... बताया।

ख. राधा .... दादा जी ने पूछा।

ग. उन लोगों को आग ......जानकारी नहीं थी।

घ. बस्तर .... बहुत आदिवासी रहते हैं।

3P8AGD

रचना

- आदिमानव के जीवन और आज के मानव के जीवन में क्या अंतर है? पाँच वाक्यों में लिखो।

योग्यता विस्तार

- वनवासियों के जीवन से संबंधित कुछ चित्र एकत्रित करो और अपनी चित्र–पुस्तिका में चिपकाओ।

शिक्षण–संकेत

- चित्रों को देखकर विषय–वस्तु को समझने में बच्चों का मार्गदर्शन करें।
- बच्चों को आदिमानव के जीवन, रहन–सहन, खान–पान आदि की जानकारी दें।
- कठिन वर्तनी वाले शब्दों को श्यामपट पर अशुद्ध लिखकर उसे बच्चों से सुधरवाएँ।

पाठ 10

चुहिया की शादी

3X82AI

एक ऋषि ने एक घायल चुहिया को बड़े लाड़–प्यार से पाला। चुहिया जब बड़ी हुई तब ऋषि को उसकी शादी की चिंता हुई। उन्होंने चुहिया से उसके मनपसंद वर के बारे में पूछा। चुहिया अत्यंत शक्तिशाली वर चाहती थी। ऋषि ने चुहिया की पसंद के वर को ढूँढने का प्रयास किया। अंत में उन्हें कौन–सा वर मिला, आओ इस कहानी में पढ़ें।

किसी वन में एक ऋषि रहते थे। वे अपने आश्रम में ही रहकर अपना अधिक समय पूजा–पाठ, ईश्वर का ध्यान करने में व्यतीत करते थे।

एक दिन ऋषि अपनी कुटी के बाहर ध्यान में मग्न थे। अचानक उनकी गोद में चील के पंजे से छूटकर, एक चुहिया आ गिरी। ऋषि का ध्यान भंग हो गया। उन्हें उस अधमरी चुहिया पर तरस आ गया। उन्होंने चुहिया का घाव धोया, उसे दूध पिलाया। चुहिया चार–छह दिन में बिल्कुल ठीक हो गई।

ऋषि अब रोज ही अपने हाथों से चुहिया को खाना खिलाते। वे उसे खूब प्यार करते थे और अपनी बेटी के समान मानते थे। ऋषि के लाड़–प्यार से चुहिया खूब मोटी–तगड़ी हो गई।

चुहिया अब बड़ी हो गई थी। ऋषि को चुहिया के विवाह की चिंता हुई। उन्होंने उससे पूछा, ''बेटी, तुझे कैसा वर पसंद है?'' चुहिया ने कहा, ''पिता जी, मुझे ऐसा वर चाहिए, जो अत्यंत शक्तिशाली हो।''

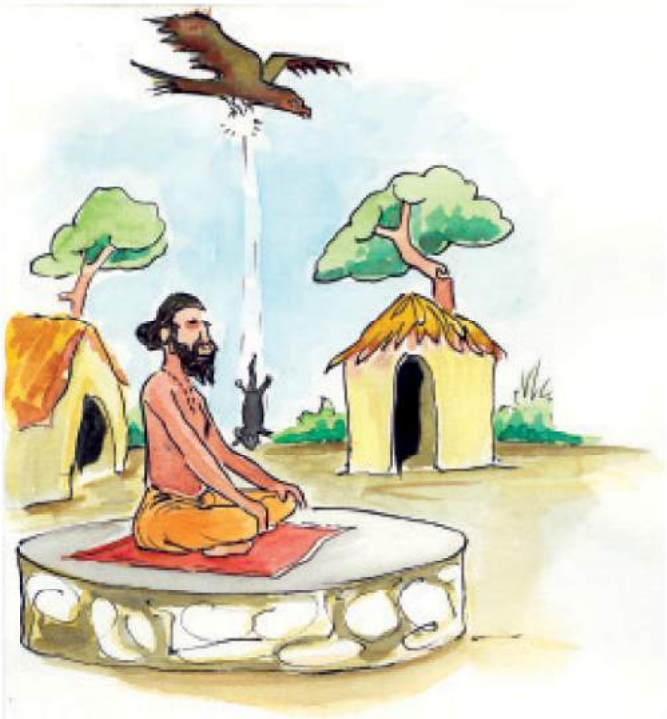

ऋषि ने सोचा, 'संसार में सूर्य से अधिक शक्तिशाली कोई नहीं है। अतः मुझे सूर्य के पास चलना चाहिए।'

ऋषि ने चुहिया को एक सुंदर युवती के रूप में बदल दिया था। वे उसे लेकर सूर्यदेव के पास पहुँचे। सूर्य के पास पहुँचकर ऋषि ने उनसे कहा,

"भगवन्! यह मेरी पुत्री है। यह अपना विवाह एक ऐसे वर के साथ करना चाहती है, जो अत्यंत शक्तिशाली हो। संसार में आपके समान शक्तिशाली और कोई नहीं है। अतः आप इसे स्वीकार कीजिए।"

सूर्य भगवान ने ध्यान लगाकर यह जान लिया कि ऋषि जिसे अपनी बेटी बता रहे हैं, वह तो एक चुहिया है। लेकिन वे ऋषि से स्पष्ट इंकार भी नहीं कर सकते थे। इसलिए उन्होंने बात बनाकर कहा, "ऋषिवर! आपका यह कहना ठीक नहीं है कि मैं संसार में सबसे अधिक शक्तिशाली हूँ। मुझसे अधिक शक्तिशाली तो बादल है, जो जब चाहता है, मेरा प्रकाश रोक लेता है। आप कृपया उसी के पास जाइए।"

बात ऋषि की समझ में आ गई। वे चुहिया को लेकर बादल के पास पहुँचे। बादल से भी उन्होंने वही कहा, जो सूर्यदेव से कहा था। बादल ने भी ध्यान लगाया। उसे भी ज्ञात हो गया कि ऋषि चुहिया के साथ मेरा विवाह करना चाहते हैं। उसने थोड़ा विचारकर कहा, "महात्मन्! आपने मुझे सर्वशक्तिमान समझा, इसके लिए धन्यवाद! परंतु मैं सर्वशक्तिमान नहीं हूँ। मुझसे अधिक तो शक्तिशाली पर्वतराज हिमालय हैं, जो आसानी से मेरा मार्ग रोक लेते हैं। आप कृपया उन्हीं के पास जाइए।"

अब ऋषि पर्वतराज हिमालय के पास पहुँचे। उन्होंने अपने मन की बात पर्वतराज से कही। पर्वतराज ने ध्यान लगाकर सारी बात जान ली। वे ऋषि से बोले, "ऋषिवर! आप मेरे यहाँ पधारे, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ, किन्तु मैं दुनिया में सर्वशक्तिमान नहीं हूँ। मुझसे अधिक शक्तिमान तो चूहे हैं, जो मेरे अंदर अपने रहने के लिए बिल बना लेते हैं। आप उन्हीं के पास जाइए।"

ऋषि अपने आश्रम में लौट आए। अच्छा मुहूर्त देखकर ऋषि ने अपने आश्रम में ही रहनेवाले एक मोटे–तगड़े चूहे से चुहिया का विवाह कर दिया।

शब्दार्थ

सर्वशक्तिमान – सबसे अधिक शक्तिशाली या ताकतवर

आभारी – उपकार मानने वाला

मुहूर्त – कार्य करने का शुभ समय

आश्रम – ऋषि–मुनि का निवास–स्थान

पर्वतराज – हिमालय

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. ऋषि को चुहिया कैसे मिली?

प्र.2. चुहिया जब बड़ी हो गई तो ऋषि को किस बात की चिंता हुई?

प्र.3. चुहिया अपने लिए किस प्रकार का वर चाहती थी?

प्र.4. ऋषि ने सबसे अधिक शक्तिमान किसे माना?

प्र.5. बादल ने हिमालय पर्वत को अपने आपसे शक्तिमान क्यों बताया?

प्र.6. ऋषि चुहिया की शादी करने के लिए किस–किसके पास गए?

प्र.7. यदि चुहिया ऋषि की गोद में नहीं गिरती तो उसका क्या होता?

प्र.8. तुम्हारे विचार से संसार में सबसे शक्तिशाली कौन है?

प्र.9. नीचे लिखे वाक्यों को कहानी के क्रम के अनुसार लिखो।

क– ऋषि अपनी पुत्री को लेकर सूर्यदेव के पास पहुँचे।

ख– चुहिया चार–छह दिन में ठीक हो गई।

ग– ऋषि ने एक मोटे–तगड़े चूहे से चुहिया का विवाह कर दिया।

घ– पर्वतराज बोले, "ऋषिवर, आप मेरे यहाँ पधारे, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ।"

ङ– बादल ने कहा, "मुझसे तो अधिक शक्तिशाली पर्वतराज हैं।"

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. नीचे लिखे शब्दों के जोड़ों में से सही शब्द चुनकर लिखो।

ऋषि / रिषि; आस्रम / आश्रम; पर्वत / पव्रत; बिल / बील; ग्यान / ज्ञान; स्वीकार / श्वीकार।

प्र.2 नीचे दिए वाक्यों के खाली स्थानों में | के, | ने, | में, | को, | के लिए, | से | **उचित शब्द का प्रयोग कर वाक्य पूरे करो।**

क– उनकी गोद ..... एक चुहिया आ गिरी।

ख– ऋषि हिमालय ..... पास पहुँचे।

ग– बादल ..... भी ध्यान लगाया।

घ– ऋषि चुहिया ..... लेकर सूर्य के पास गए।

ङ– ऋषि चुहिया ..... वर ढूँढ़ने गए।

च– हिमालय आसानी ..... मेरा मार्ग रोक लेता है।

पढ़ो, समझो और लिखो–

बाईं ओर जो शब्द लिखे हैं, वे सब पुरुष जाति के हैं। दाईं ओर के लिखे शब्द स्त्री जाति के हैं। पुरुष जाति के शब्दों को पुल्लिंग और स्त्री जाति के शब्दों को स्त्रीलिंग कहते हैं।

शेर – शेरनी

हिरन – .....

बकरा – .....

बिल्ला – .....

पहाड़ – .....

बादल – .....

लड़का– .....

प्र.3 'नदी' शब्द में अंतिम वर्ण है 'दी'। 'दी' से शब्द बनता है 'दीपक'। 'दीपक' में अंतिम वर्ण है 'क'। क से शब्द बनता है 'कमल'। इस तरह शब्द के अंतिम वर्ण से शब्द बनाते जाओ। यह शब्दों की रेल बन जाएगी।

नदी दीपक कमल

शब्दों की इस रेलगाड़ी को आगे बढ़ाओ। शब्दों की रेल का खेल श्यामपट पर लिखकर खेलो।

याद रखो

- कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनके लिंग नहीं बदलते जैसे–

  उल्लू, गिरगिट, चमगादड़, कॉपी, लेखनी आदि।

प्र.4 ऐसे अन्य चार शब्द लिखो जिनके लिंग नहीं बदलते।

रचना

नीचे एक बंदर के बारे में कुछ बातें लिखी हैं। इनके आधार पर एक कहानी बनाओ।

आम के पेड़ पर रहता था

नदी का पानी पीता था

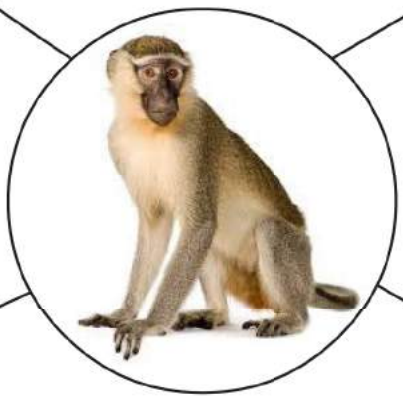

3XGXC6

लालची था

कौए का दोस्त

_____

_____

_____

_____

_____

क्रियाकलाप–

प्र.1 अपनी चित्र–पुस्तिका में चुहिया का चित्र बनाओ और उसमें रंग भरो।

योग्यता विस्तार

- पशु–पक्षियों की एक–एक कहानी हर एक विद्यार्थी कक्षा में सुनाएगा।
- अगर ऋषि को बिल्ली का घायल बच्चा मिलता तो कहानी कैसे बनती? सभी विद्यार्थी मिलकर कहानी बनाएँ।
- स्त्रीलिंग–पुल्लिंग बनाने का खेल खेलो। कक्षा का एक समूह एक शब्द बोलेगा दूसरा समूह उसका लिंग बदलकर बताएगा।

शिक्षण–संकेत

- कहानी को हाव–भाव के साथ सुनाएँ और अनुकरण वाचन कराएँ। पाठ समाप्त करने के पश्चात् कहानी का सार विद्यार्थियों से पूछें।
- बच्चों को समूह में पढ़ने का अवसर दें।

पाठ 11

दादा जी

परिवार में दादा–दादी का पोते–पोती के प्रति गहरा स्नेह रहता है। पोते–पोती भी दादा–दादी के प्रति गहरा प्रेम रखते हैं। एक–दूसरे के हित की रक्षा भी वे करते हैं। इस पाठ में दादा जी के प्रति एक पोते का ऐसा ही भाव दर्शाया गया है। बच्चे और बूढ़े लोगों की प्रवृत्ति एक–सी होती है। इस पाठ से यह स्पष्ट होता है।

विक्की को स्कूल से घर आने में देर हो गई थी। उसकी माँ चिंतित हो रही थीं। उनकी चिंता एक घटना ने और बढ़ा दी। वे जब घर के बाहर लैटर–बॉक्स में चिट्ठियाँ देखने आईं, तभी हवा का तेज़ झोंका आया और घर के किवाड़ एकाएक ऐसे बंद हुए कि खोले नहीं खुले। भीतर अकेले पिता जी रह गए। विक्की की माँ पुकारते–पुकारते थक गईं लेकिन उन्होंने भीतर से कोई जवाब नहीं दिया। विक्की की माँ बेचारी रुआँसी हो गईं। आसपास के लोग घर के सामने इकट्ठे हो गए।

विक्की के स्कूल में जब क्रिकेट का मैच समाप्त हुआ, तब वह घर आया। घर के बाहर लोगों की जमा भीड़ को देखकर वह हैरान हो गया। उसने देखा, उसकी माँ बार–बार आँचल से आँखें पोंछ रही हैं। वह एकदम दौड़कर माँ के पास पहुँचा और उनसे पूछ बैठा,"माँ, क्या बात है? तू क्यों रो रही है?"

माँ तो कुछ नहीं बोल पाईं लेकिन पास में खड़ी उषा मौसी ने उसे बताया, "घर का दरवाजा अपने आप बंद हो गया है। पिता जी अन्दर हैं। इधर से हम लोग आवाज लगा रहे हैं, वे किवाड़ खोलते ही नहीं। दिखाई भी नहीं दे रहे।"

विक्की ने हँसकर कहा,"माँ! जरा–जरा–सी बात पर आँखों में आँसू भर लाती हो। लो, मैं दादा जी से कहकर दरवाज़ा खुलवाए देता हूँ।"

इतना कहकर विक्की ने अपना बस्ता वहीं सीढ़ियों पर रखा और आम के पेड़ की ओर लपका। माँ ने उसे रोका, "अरे बेटे, पेड़ पर मत चढ़ना। कहीं तेज हवा के झोंके में ..... ।"

"माँ, तुम इस तरह डराने की बातें क्यों करती हो? मुझे कुछ नहीं होगा। तुम देखती जाओ, मैं क्या करता हूँ।"

आम के पेड़ की एक डाल विक्की के घर की खिड़की के बराबर जाती थी। विक्की पेड़ पर चढ़कर सरक–सरककर खिड़की के सामने पहुँच गया। कमरे और कमरे के बाहर

का पूरा दृश्य उसे दिखाई दे रहा था। लेकिन वहाँ दादा जी नज़र नहीं आ रहे थे। वह टकटकी लगाए खिड़की की ओर देख रहा था। माँ ने पूछा, "विक्की, पिता जी दिखाई पड़े ?"

विक्की ने कहा, "नहीं माँ.....हाँ।" दादा जी अब उसके सामने थे। उनके हाथ में मिठाई की प्लेट थी। विक्की की माँ ने विक्की के जन्मदिन के लिए मिठाइयाँ बनाई थीं। लगता है दादा जी के हाथ में वे ही मिठाइयाँ पड़ गईं। लेकिन डॉक्टर ने तो उन्हें मिठाई खाने के लिए मना किया था। फिर दादा जी मिठाई क्यों खा रहे हैं?

माँ बार–बार पिता जी के बारे में पूछ रही थीं लेकिन विक्की खामोश था। अचानक दादा जी की नज़र विक्की पर पड़ी। वे भौंचक्के रह गए। उन्होंने होठों पर उँगली रखते हुए कहा "श.....श.....श", यानी चुप रहना। विक्की ने सोचा," दादा जी ने भी मेरी कई बार सहायता की है। छमाही परीक्षा का परीक्षाफल आया था। तब पापा की मार से दादा जी ने ही बचाया था। उन्होंने पिता जी से कहा था, "अब मैं ही विक्की को गणित पढ़ाऊँगा। लगता है, वह गणित में कमज़ोर है।" मुझे भी इस समय दादा जी की सहायता करनी चाहिए।"

दादा जी का इशारा समझकर विक्की ने मुस्कुराते हुए गर्दन हिला दी। प्लेट को यथास्थान रखते हुए दादा जी ने तौलिए से मुँह पोंछा और वे दरवाज़ा खोलने आ पहुँचे।

रात हुई। विक्की के जन्मदिन का समारोह मनाया गया। बच्चों ने खूब धूम–धड़ाका किया। विक्की को तिलक लगाया गया। सब बच्चों ने गीत गाया, 'तुम जियो हजारों साल।' विक्की ने अपने मित्रों को मिठाइयाँ खिलाईं। फिर वह प्लेट लेकर दादा जी के पास गया। "दादा जी, मुँह खोलिए"– वह बोला।

"नहीं बेटा, मैं मिठाई नहीं खाऊँगा। डॉक्टर ने मना किया है।" "दादा जी, डॉक्टर ने मना किया है, आप मिठाई नहीं खाएँगे। बताऊँ सबको दोपहर की बात।"

"न,न,न....."कहते हुए दादा जी ने रसगुल्ला गपक लिया और वे बोले, "तुम–जि–ओ ह–जा–रों साल।"

शब्दार्थ

लैटरबॉक्स – पत्र–पेटी

रूआँसी – रोने जैसी

हैरान – आश्चर्यचकित

खामोश – चुप

नीचे कुछ शब्दों के अर्थ नहीं लिखे हुए हैं। उन शब्दों के अर्थ कोष्ठक में से छाँटकर लिखो।

(उचित जगह, बगैर पलकें झपकाए देखना, हक्का–बक्का)

टकटकी लगाकर देखना – ——————————

भौंचक्का – ——————————

यथास्थान – ——————————

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. विक्की के घर उस दिन कौन–कौन सा उत्सव मनाया जा रहा था ?

प्र.2. विक्की की माँ क्यों चिंतित हो रही थीं ?

प्र.3. विक्की हैरान क्यों हो गया ?

प्र.4. माँ की बात सुनकर विक्की को हँसी क्यों आ गई ?

प्र.5. दादा जी अंदर क्या कर रहे थे ?

प्र.6. विक्की ने दादा जी की सहायता क्यों की ?

प्र.7. विक्की ने दादा जी की कौन–सी बात सबसे छुपाई थी ?

प्र.8. दादाजी ने बहुत देर तक किवाड़ क्यों नहीं खोले ?

प्र.9. किवाड़ खुलने पर विक्की की माँ ने दादा जी से किवाड़ न खोलने का कारण जरूर पूछा होगा। दादा जी ने उस समय क्या बहाना बनाया होगा? सोचकर लिखो।

प्र.9. यदि विक्की दादा जी की मिठाई खाने वाली बात सभी को बता देता तो दादा जी क्या करते?

भाषा–अध्ययन और व्याकरण

प्र.1. पाठ में शब्द आए हैं–'पुकारते–पुकारते', 'सरकते–सरकते'। इसी तरह के अन्य पाँच शब्द लिखो और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

प्र.2. सही शब्द चुनकर लिखो।

क.	खत्म	ख.	लेकिन	ग.	परीक्षा
	खतम		लेकीन		परिक्षा
घ.	चींता	ङ.	आंचल	च.	चढ़ना
	चिंता		आँचल		चड़ना

प्र.3. पढ़ो, समझो और लिखो

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मिठाई	मिठाइयाँ	लड़का	लड़के
खिड़की	खिड़कियाँ	रसगुल्ला	रसगुल्ले
साड़ी	– – –	बस्ता	– – –
बकरी	– – –	रास्ता	– – –
लकड़ी	– – –	झगड़ा	– – –
सहेली	– – –	तवा	– – –

- हवाई जहाज आसमान उड़ रहा है।

तुम्हें यह वाक्य कुछ अटपटा लग रहा होगा। अब इस वाक्य को फिर से पढ़ो।

- हवाई जहाज आसमान में उड़ रहा है।

प्र.4. इन वाक्यों को ठीक करो।

क. दादा जी तौलिए मुँह पोछा। ——————————

ख. बच्चों खूब धूम धड़ाका किया। ——————————

ग. धूप बैठकर चना खाया । ——————————

घ. पहाड़ी गाँवों बाँध डर बना रहता है। ——————————

अब वे सभी शब्द फिर से लिखो जिन्हें तुमने जोड़ा है।

——————————————————————————————

रचना

तुम अपना जन्मदिन किस प्रकार मनाते हो ?

योग्यता विस्तार

- तुम अपने दादा जी से कहानियाँ, घटनाएँ, चुटकुले जरूर सुनते होगे। हर एक विद्यार्थी दादा जी से सुनी हुई कहानी या घटना या चुटकुला कक्षा में सुनाए।

शिक्षण–संकेत

- बच्चों को समूह में पढ़ने का अवसर दें।
- मुख्य संवादों का छात्र–छात्राओं से मंचन कराएँ।
- छात्र/छात्राओं से अपने–अपने दादा जी के संबंध में बताने को कहें।
- परिवार के अन्य बड़े सदस्यों के प्रति उनका क्या दृष्टिकोण है, जानें।

3XZPFG